रामाश्रम सत्संग डिजिटल प्रकाशन

ॐ

आराधना

रामाश्रम सत्संग (रजि.), ग़ाज़ियाबाद

शास्त्री नगर, ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

आराधना

(रामाश्रम सत्संग डिजिटल प्रकाशन)

रामाश्रम सत्संग (रजि.)

शास्त्री नगर, ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

प्रकाशक:

आचार्य एवं अध्यक्ष

रामाश्रम सत्संग (रजि.), ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

प्रथम संस्करण जुलाई २०२४ **ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)**

प्रकाशाधीन :

निःशुल्क

प्राप्ति स्रोत :

वेबसाइट, whatsapp, फेसबुक

रामाश्रम सत्संग (रजि.), ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

मुद्रण :

रामाश्रम सत्संग डिजिटल प्रकाशन

शास्त्री नगर, ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

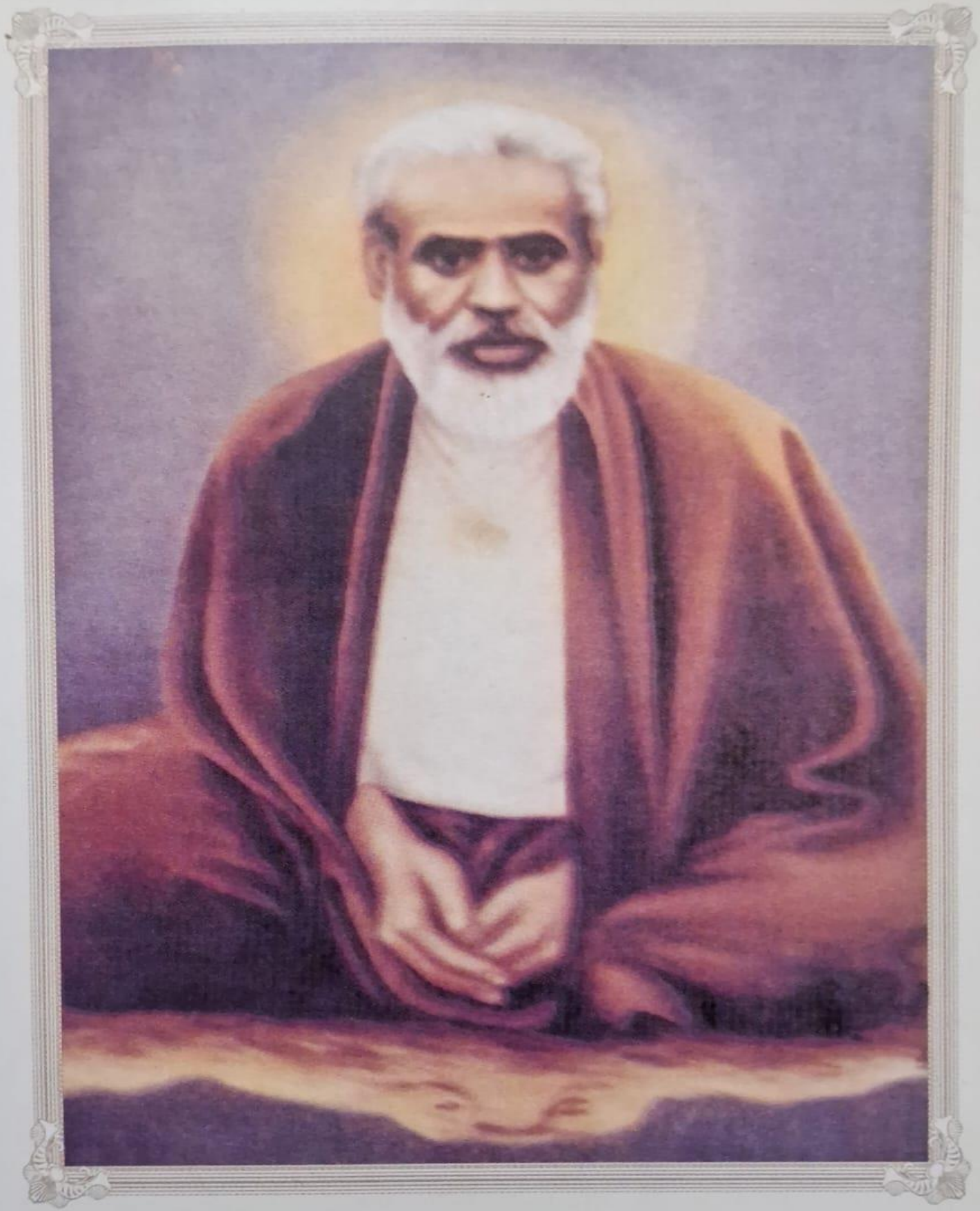

परम संत पूज्य महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (उर्फ लाला जी)

(जन्म: 4 फरवरी, 1873; निर्वाण: 14 अगस्त, 1931)

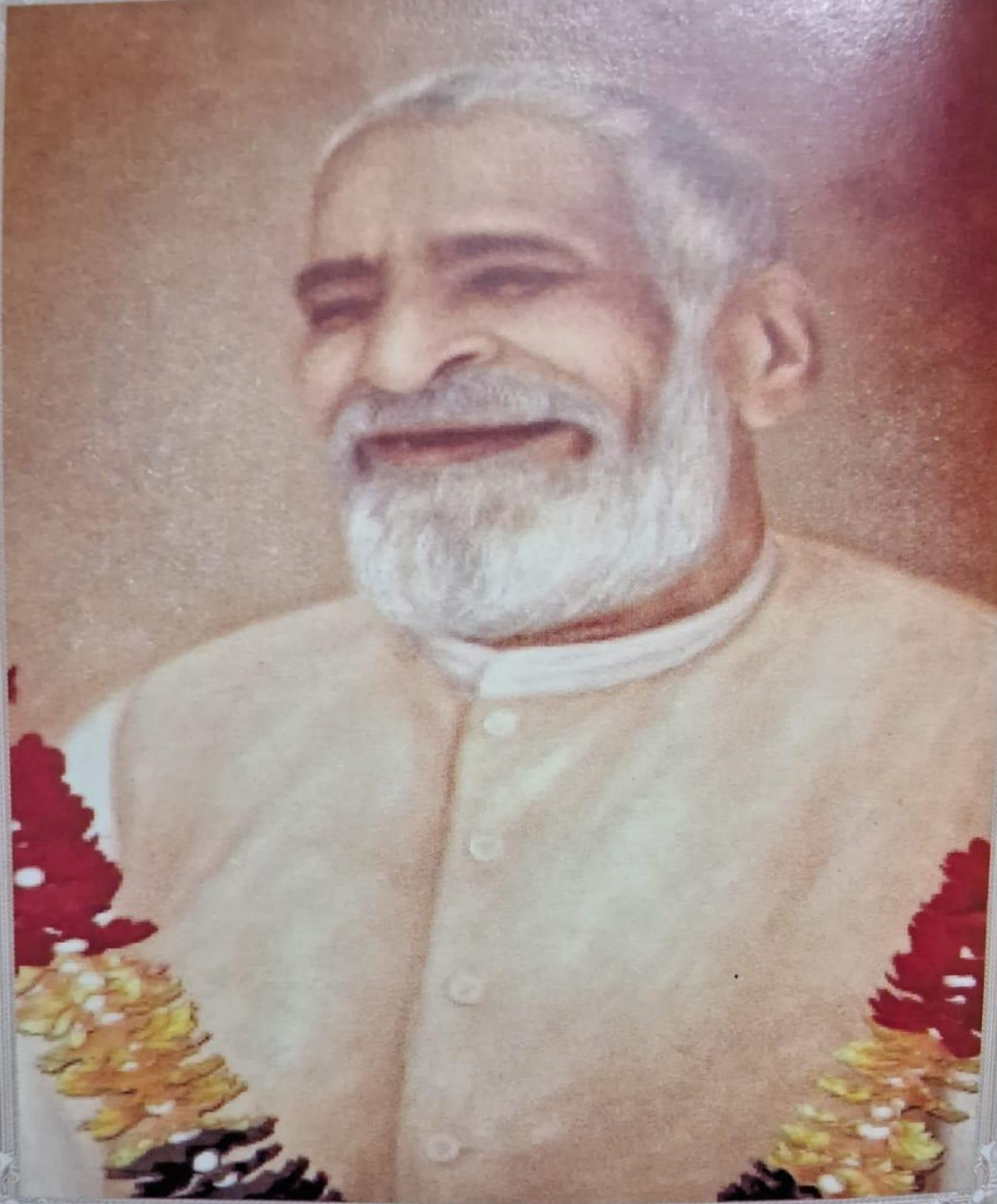

परम संत पूज्य महात्मा डॉ श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

(जन्म: 15 अक्टूबर, 1894; निर्वाण: 18 मई, 1970)

ब्रह्मलीन सदगुरू डॉ. करतार सिंह जी महाराज

(जन्म: 13 जून, 1912; निर्वाण: 15 जून, 2012)

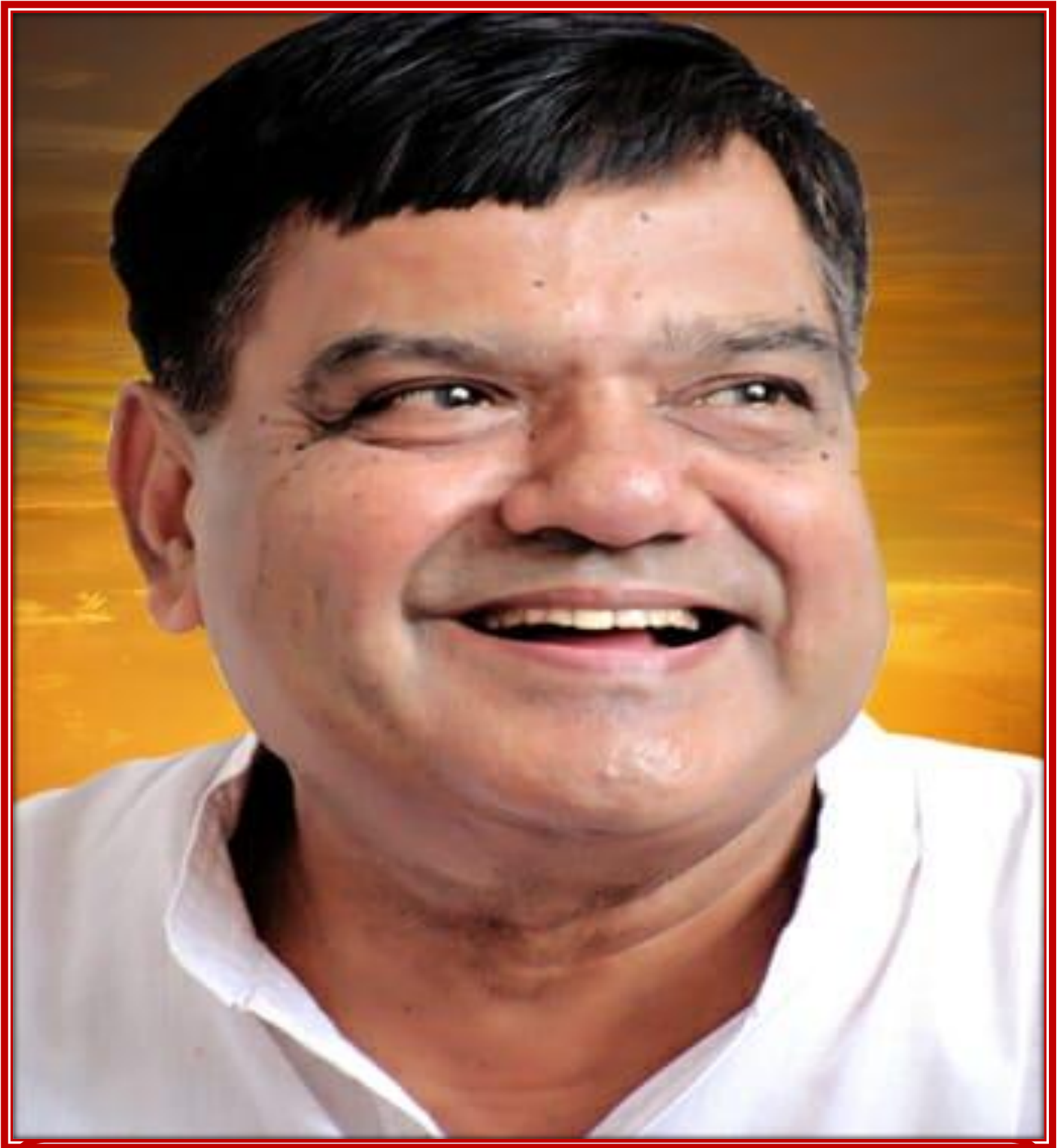

परम संत डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

(जन्म: 5 अक्टूबर, 1948 - निर्वाण: 17 अप्रैल, 2020)

सम्पादकीय निवेदन

पिछले वर्ष भण्डारे के अवसर पर एक लम्बे समय के बाद आराधना का पाँचवां संस्करणप्रकाशित किया गया था जिसको सभी सत्संगी भाई बहनों ने सहर्ष स्वीकार किया। गुरुदेव कृपा से पाँचवे संस्करण की लगभग सभी कापियाँ कुछ ही समय में बिक गई औभाईयों का अनुरोध था कि छठा संस्करण भी जल्द ही प्रकाशित किया जाये ।

अतः प्रस्तुत है आराधना का छठा संस्करण जिसमें कुछ एक भजन, शबद और मारफत की ग़ज़ले जो कि पिछली बार छपने से रह गई थीं को इस बार सम्मिलित कर लिया गया है। गुरुदेव के चरणों में प्रार्थना है कि आराधना के इस संस्करण से जो दिव्य आनन्द प्रवाहित हो उसको हम सब ग्रहण कर अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करें।

हमें उम्मीद है कि हमारा यह प्रयास पिछली बार की तरह इस बार भी पसंद आयेगा और आपका जो उत्साह और सहयोग हमको मिल रहा है वह आगे भी मिलता रहेगा।

डा. शक्ति कुमार सक्सेना

सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष

रामाश्रम सत्संग (रजि.) गाज़ियाबाद

विषय – सूचि

	ॐ सहनाववतु	
1	मेरे तो आधार है	
2	सर्वशक्तिमते परमात्मने	
3	मंगलाचरण	
4	ईश्वर स्तुति- हे जगनायक	
5	गुरु वन्दना- प्रातः काल	
6	गुरु वन्दना- सायंकाल	

भजन

	भजन	क्रमांक
1	अपने चरणों में थोड़ी	9
2	अब मै शरण तिहारी	33
3	अब तो निभाया सरेगी	47
4	आज मेरे घर प्रीतम	51
5	आनन्द ही आनन्द	65
6	एक तुम्ही आधार	32
7	ऐसी लाज तुझ बिन	37
8	ऐसो को उदार	55
9	ॐ गुरु ॐ गुरु	3
10	ऊँची मेड सतगुरु की	21
11	क्या निराली शान है	13
12	गुरु चरणों का है अभिनन्दन	2
13	गुरु पइयां लागूं	60
14	गुरुवर मेरे बिन तेरे	63
15	चरणों में तेरे लीन सदा	22
16	जीवन का मैंने सौंप दिया	30

17	जामे आवागमन लागी	59
18	तू दयालु दीन हौ	1
19	तेरे मेहरबानी का है बोझ इतना	67
20	तेरा राम जी करेंगे	31
21	तनक हरि चितवौली	62
22	दरस बिन दुखन लागे लागे नैन	48
23	दर पे तुम्हारे आये है	45
24	धुल तेरे चरणों की	66
25	नाथ मैं थारो जी	58
26	नाम जपं क्यों	27
27	पधारो कुतिया के मेहमान	8
28	प्यारे दर्शन दीजो	12
29	पायो जी मैंने	36
30	पितु मातु सहायक स्वामी सखा	57
31	प्रभु जी मेरे जीवन	16
32	प्रभुजी संगत शरण तिहारी	43
33	प्रभु जी मेरे अवगुण	39
34	बहुत कठिन है डगर	35
35	बहुत दिनन में	29
36	भज मन राम चरन	50
37	भरी कंटकों से	34
38	मोकों कछु न चहिए राम	04
39	मन रे परसि	64
40	मन लागो मेरो यार	56
41	मेरा अवगुण भरा है शरीर	53
42	मेरे देवता मुझको देना सहारा	15
43	मेरे रहीम रहम कर साहिब	24
44	मेरे तो गिरधर गोपाल	52
45	मोहे अपने रंग में रंग दे	20

46.	मोही लागी लगन	18
47.	मोहे अपनी शरण में ले लो	11
48	म्हारो जनम मरण को साथी	42
49.	म्हाने चाकर राखो जी	54
50.	राखत आये लाज जनन की	06
51.	रघुबर तुमको मेरी लाज	46
52.	राम का गुणगान करिये	44
53.	राम सुमिर, राम सुमिर	49

54	विनती यही है प्रभुजी	17
55.	शरण में आयें हैं हम तुम्हारी की	14
56	सतूगुरु तेरे चरणों की'	23
57	सत्गुरु जी तेरा दर्शन	26
58	सत्गुरु हो महाराज	38
59	सुनेरी मैंने निर्बल के बल राम	25
60	सबसे ऊँची प्रेम सगाई	61
61	सेवक पड़ी मैं दाता	10
62	हे गोविन्द हे गोपाल	41
63	हे दयामय आपका	19
64	हमसे अधम आधीन	28
65	हे मेरे गुरुदेव करुणा	07
66	हे सतगुरु स्वामी	05
67	हे नाथ अब तो ऐसी	40
68	आभार	68

शबद

	शबद	क्रमांक
1	अब मैं कौन उपाय	08
2	आज हमारे मंगल चार	11
3	आवो मीत प्यारे	03
4	ऐसी किरपा मोहि करहु	13
5	गुरुदेव माता गुरुदेव पिता	19
6	गुरु गुरु गुरु करी मन मोर	22
7	ठाकुर तुम सरणाई आइया	01
8	चरण कमल तेरे	20
9	तू मै माण निमाणी	16
10	तुझ बिन कवन हमारा	09
11	तुम हो सब राजन के	15
12	तुम करहु दया मेरे सांई	12
13	दरसन देख जीव गुर तेरा	06
14	प्रभ जू तो कह लाज हमारी	05
15	प्रभ जी तू मेरे प्राण आधारै	10
16	प्रभ मेरे प्राण पिआरे	04
17	बिसर गई सब तात पराई	14
18	रे मन ऐसो कर सनियासा	02
19	सफल सेवा गिपल राइ	07
20	साथी 'मन का मानु तिआगउ	18
21	सच्चे पातशाह मेरी बख्श खता	21
22	हमरी करो हाथ दे रच्छा	17
	जपुजी साहब का सरल भाष्य	

ग़ज़लें

	ग़ज़लें	क्रमांक
01	अब रंज से ख़ुशी से	18
02	आसरा इस जहां का मिले न मिले	29
03	इक चश्मे इनायत का	02
04	इसी दर पे ही अब तो	30
05	जहाँ रक्स करती है	12
06	तेरे दामने करम का	03
07	तेरा नाम खालिके दो जहाँ	01
08	तुम जाने आरजू हो	06
09	दिल तो है अब बराये नाम	17
10	दिल में अब दर्द मौहब्बत	20
11	कौन कहता है तुझे	23
12	डरता हूँ, मेरे गुरुवर	26
13	नकाबे चश्म मुसलसिल	05
14	नजर मेहर की हम पे हो जाए	27
15	न ख्याल दीनों ईमां	21
16	निगाहें लुत्फ़ मुझ पर	31
17	फिर जामाने में चार जानिब	24
18	मालिक तेरी रज़ा रहे	08
19	मेरे साकिया बता दे	11
20	मै तुझे पाने कि हरदम	15
21	ये समझ कर तेरे डर पे	13
22	रंगे महफिल	16
23	रहें कायम सदा	28
24	शरावें उत्फत पिला दे	09
25	साए में तुम्हारे हैं	14
29	सरापा दीद बनकर	07

27	सना बशर के लिये है	10
28	समझ सकें हम तुझे खुदाया	25
29	हर लमहा तुझको	04
30	हम चल रहें थे सामने	19
31	हर वक्त आ मेरे ख़्यालों में	22
32	इल्तजा	32
	भला करो भगवान	
	प्रसादार्पण एवं दुआ	
	जामे राहत से सभी सरशार हो	
	शांति पाठ	
	परमसंत डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज	
	कि वाक्यमणियाँ	
	गीता के बारहवें अध्याय का भाष्य	
	सबका भला करो भगवान	

ॐ सहनाववतु। सहनौ भुनक्तु। सहवीर्ययं करवा रहै।

तेजस्विनां वधीतमस्तु। मा विद्विषा वहै।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः!!

हे पूर्णब्रह्म परमात्मन ! आप हम दोनों (गुरु-शिष्य) की साथ-साथ रक्षा करें, हम दोनों का साथ-साथ पालन करें, हम दोनों साथ ही साथ शक्ति प्राप्त करें ! हम दोनों की पढ़ी हुई विद्या तेजोमयी होवे ! हम दोनों में परस्पर द्वेष न हो, दोनों की दुई मिट जावे, स्नेह-सूत्र में बंध कर एक हो जावें एवं परम लय अवस्था को प्राप्त हों !

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः !

मेरे तो आधार है , गुरुदेव के चरणारविन्द।
मेरे तो आधार है, राम के चरणारविन्द, ।
मेरे तो आधार है , श्रीकृष्ण के चरणारविन्द ।
मेरे तो आधार है , करतार के चरणारविन्द।

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः ।
सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री कृष्णाय नमः ।
सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री करताराय नमः ।

मंगलाचरण

बंदऊँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर।।
बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा । सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।|
अमिय मूरिमय चूरन चारू । समन सकल भव रुज परिवारू॥
सुकृति संभु तन विमल विभूति । मंजुल मंगल मोद प्रसूति॥
जनमन मंजु मुकुर मल हरनी, किये तिलक गुनगन बस करनी।।
श्रीगुरु पद नख मनिगन जोती । सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती ।।
दलन मोह तम सो सप्रकासू । बड़े भाग्य उर आवहिं जासू ।।
उघरहिं विमल विलोचन ही के । मिट्टहिं दोष दुख भव रजनी के ।
सूझहिं राम चरित मनिमानिक | गुपुत प्रगट जह जो जेहि खानिक ।।

गुरुब्रह्मा , गुरुर्विष्णु, गुरुदेवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

त्वमेवमाता, चपितात्वमेव,त्वमेवब्न्धुश्चसखात्वमेव ।
त्वमेवविद्या, द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देवः ।।

भावार्थ

- मै गुरु महाराज के चरण कमल की वन्दना करता हूँ जो कृपा के समुद्र और नर रूप में श्री हरि ही है और जिनके वचन महामोह रूपी घने अन्धकार के नाश के लिए सूर्य किरणों के समूह हैं ।1।
- मै गुरु महाराज के चरण कमलों की रज़ कि वन्दना करता हूँ जो सुरुचि (सुंदर स्वाद) , सुगंध तथा अनुराग रूपी रस से पूर्ण है। वह अमर मूल (संजीवनी जड़ी) का सुंदर चूर्ण है, जो सम्पूर्ण भव रोगों के परिवार को नाश करने वाला है ।।2।।
- वह रज़ सुकृति (पुण्यवान पुरुष) रूपी शिव जी के शारीर पर सुशोभित निर्मल विभूति है और सुंदर कल्याण और आनन्द कि जननी है, भक्त के मन रूपी सुंदर दर्पण के मैल को दूर करने वाली और तिलक करने से गुणों के समूह को वश में करने वाली है ।।3॥
- श्री गुरु महाराज के चरण-नखों कि ज्योति मणियों के प्रकाश के सामान है, जिनके स्मरण करते ही ह्रदय में दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करने वाला है, वह जिसके ह्रदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य है ।।4।।
- उसके ह्रदय में आते ही ह्रदय के निर्मल नेत्र खुल जाते और संसार रूपी रात्रि के दोष-दुःख मिट जाते है एवं श्री रामचरित्र रूपी मणि और माणिक्य, गुप्त और प्रकट जहां जो जिस खान में है, सब दिखाई पड़ने लगते है।।5।।

ईश्वर स्तुति

हे जगनायक ! विश्व विनायक ! हे जगजीवन के जन हे ।
हे दुःख भंजन ! जन मन रंजन ! जय-जय आनंद के घन हे ।।
गुरु पितु माता, सब जग त्राता, मनुज रूप नर नागर हे ।
हे निर्गुण हे निराकार प्रभु । निर्भय निगम निरंजन हे ।।
व्यक्त तुम्हीं अव्यक्त तुम्हीं हो, सत् चित आनंद रूप विभो ।
गुणागार गोतीत अगोचर अनुभवगम्य अजेय प्रभो ।।
सब के स्वामी अंतर्यामी पारब्रह्म परमेश्वर हे ।
करुणासागर सब गुण आगर सत् चित प्रेम निकेतन हे ।।
हे जग त्राता विश्व विधाता, हे सुख शांति निकेतन हे !
प्रेम के सिन्धु, दीन के बन्धु, दुःख दारिद्र विनाशन हे !!
नित्य अखंड अनंन्त अनादि, पूरण ब्रह्म सनातन हे ।
जग आश्रय जग-पति जग-वन्दन, अनुपम अलख निरंजन हे !!
प्राण सखा त्रिभुवन प्रति-पालक, जीवन के अवलंबन हे ।
हे जग त्राता विश्व विधाता, हे सुख शांति निकेतन हे ।।

राम धुन

रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम!

सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम!

जय रघुनन्दन जय घनश्याम, जानकीवल्लभ जय सियाराम!!

रघुपति.....

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान! (2)

जय रघुनन्दन जय घनश्याम, जानकीवल्लभ जय सियाराम!!

रघुपति.....

भक्तन के रखवाले राम, सन्तन प्राण प्यारे राम!! (2)

जय रघुनन्दन जय घनश्याम, जानकीवल्लभ जय सियाराम!!

रघुपति.....

अवध बिहारी सीताराम, कुँज बिहारी राधेश्याम! (2)

जय रघुनन्दन जय घनश्याम, जानकीवल्लभ जय सियाराम!!

रघुपति.....

घट-घट वासी सीताराम, अन्तर्यामी राधेश्याम!! (2)

जय रघुनन्दन जय घनश्याम, जानकीवल्लभ जय सियाराम!!

रघुपति.....

अलख निरंजन सीताराम, भव-भय भंजन राधेश्याम! (2)

जय रघुनन्दन जय घनश्याम, जानकीवल्लभ जय सियाराम!!

रघुपति.....

तन में राम, मन में राम, रोम-रोम में राम ही राम!! (2)

जय रघुनन्दन जय घनश्याम, जानकीवल्लभ जय सियाराम!!

रघुपति.....

हृदय हमारे आओ राम, अब तो दरस दिखा जा राम! (2)

जय रघुनन्दन जय घनश्याम, जानकीवल्लभ जय सियाराम!! रघुपति .....

गुरु वन्दना (प्रातःकाल)

हे दीनबन्धु दयालु गुरु, केहि भांति तब गुण गाऊँ मैं !
तुम्हरे पवित्र चरित्र, केहि विधि नाथ कह के सुनाऊँ मैं !!
जिव्हा अपावन है मेरी, गुरु नाम कैसे लीजिये !
मन फँस रहा भाव-जाल में वह किस तरह प्रभु दीजिये !!
धन धान्य माया रूप हैं, क्योंकर निछावर कीजिये !
संसार सागर में फँसा, गुरु-ध्यान कैसे कीजिये !!
तन कैसे अर्पण कर सकूँ, यह तो महा पापी अधम !
धन-धान्य और मन दे के गुरु, तुम से नहीं उद्धार हम !!
श्रद्धा सुमिरनी भेंट कर, मैं दीन हो चरणों पड़ा !
मैं पतित, तुम पतित पावन, आपका है आसरा !!
भव-सिन्धु में हूँ फँस रहा, गुरुदेव मुझे उबारिये !
गहि बाँह दीनानाथ, अपराधी को पार लगाइये !!
जो दीन हो चरणों पड़े, हे नाथ ! वे सारे तरे !
तेरा भिखारी तुझ बिना, प्रभु आसरा किसका करे !!
मैं दीन हूँ, तुम दीन बन्धु, मैं अधम तुम नाथ हो !
मैं हूँ अनाथ कृपा-निधान, तो तुम अनाथों के नाथ हो !!
माता-[पिता, सुत-भ्रात-भार्या, कोई साथ न जायेंगे !
उस पाक-कुंभी नर्क में, कोई न हाथ बटायेंगे !!
यह सोच के तब शरण आया, तब ठिकाना है नहीं !
बस पार कर दो मेरी नौका, और अपना है नहीं !!

हे दीनबन्धु दयालु गुरु.....

गुरु वन्दना (सायं काल)

हे दीनबन्धु दयालु गुरु, स्वीकार कोटि प्रणाम हो।
महिमा तुम्हारी है अगम अतिशय पवित्र महान हो।।
माया की दल दल में फंसा हूँ , बस नही चलता मेरा ।
सब हौसले हारा हुआ हु , आपका है आसरा।।
है आपके पदकंज निर्मल हरण भव संताप है।
फिर भी प्रभु हो कर तुम्हारा शेष मेरे पाप है।।
हूँ दीन हीन दुखी अकिंचन, लेश अधिकारी नहीं।
फिर भी पतित को त्राण देना तुमको कुछ भारी नहीं ।।
मन एक और अनेक बंधन में बंधा है रो रहा।
कोमल हृदय समरत्थ सन्मुख आपके सब हो रहा।।
अति दुखित हूँ अति विकल हूँ, मन जल रहा त्रय ताप से।।
प्रभु शांति जल बरसाइये आशा लगी है आपसे।
मेरे महादानी पिता मुझ पर अनुग्रह कीजिये।
मन मधुप हो पड़ पद्म पर , वरदान ऐसा दीजिये।।
नहिं नर्क से भय कुछ मुझे नहि स्वर्ग की है कामना।
जहां भी रहूँ क्षण भर न भूलूं, दीन की है याचना।।
संतोष अब होता नहीं , हे नाथ करुणा कीजिये।
निज से विलग मत कीजिये , मन प्रेम से भर दीजिये।।
मै हूँ शरण शरणागते , हे पूज्यतम करुणानिधे।
भाव ताप हरण नमामिते , हे पूज्यतम करुणानिधे॥
हे दीनबंधु .....

भजन

(1)

तू दयालु दीन हो, तू दानी हौं भिखारी,
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुँज हारी ।
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसों,
मो समान आरत नाहीं, आरति - हर तोसो ।।
ब्रह्म तू है, जीव हौं, ठाकुर तू हौं चेरो,
तात, मात, गुरु, सखा तू सब विधि हितु मेरो।
तोहि मोहि नाते अनेक, मानिये जो भावै,
ज्यों-ज्यों तुलसी कृपालु, चरन सरन पावै ।।

(2)

गुरु चरणों का है अभिनन्दन, श्रीचरणों का है अभिनन्दन,
करूँ मैं बारम्बार वन्दन, गुरु चरणों का है अभिनन्दन ।।
जलज पद गंगधार आई, जगत ने है मुक्ति पाई,
सकल विद्या है दरशाई, चरण नख ज्योति जहाँ जाई ।
सुखद शीतल जैसे चन्दन, गुरु चरणों का है अभिनन्दन ||
मोह अज्ञान मिटाते हैं, सत्य का तत्व लखाते हैं,
जीवन अमरत्व बनाते हैं, शरण में जब अपनी लेते।
जगत लगता जैसे नन्दन, गुरु चरणों का है अभिनन्दन ||
जिन्हें सुर नर मुनि सब ध्याते हैं, किन्तु वे पार नहिं पाते हैं,
ज्ञान का मार्ग लखाते हैं, ज्योति अनुपम है उस छवि की।
उसी को है शत्-शत् अभिनन्दन, गुरु चरणों का है अभिनन्दन ।।

(3)

ॐ गुरु, ॐ गुरु, ॐ गुरुदेव, ॐ गुरु, ॐ गुरु, ॐ गुरुदेव ।

मानस भज रे, गुरु चरणम्, गुरु चरणम् जय गुरु चरणम् ।।

गुरु महाराज, गुरु महाराज, गुरु महाराज, जय गुरु महाराज ।।

ॐ गुरु,..

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।।

ॐ गुरु,..

तुम्हीं हो साथी, तुम्हीं सहारे, कोई न अपना सिवा तुम्हारे ॥

ॐ गुरु...

तुम्हीं हो नैया, तुम्हीं खिवैया, तुम्हीं हो सारे जग के रखैया ।

ॐ गुरु....

(4)

मोको कछु न चहिये राम ।

तुम बिन सब जग फीको लागे, नाना सुख धन धाम ।

मोको.....

सुन्दर सन्तति सेवक, सब गुण, बुद्धि विद्या भरपूर,

कीरति कला निपुणता नीति, इनसों रखियो दूर।

मोको....

अष्ठ सिद्धि, नव निधि आपनी, और जनन को दीजै ।

मैं तो चेरो जनम-जनम को, कर धरि अपना लीजै ।

मोको..

(5)

हे सत्गुरु स्वामी दया कीजियेगा

मुझे अपने चरणों की रज दीजियेगा ।

रहूँ आपके प्रेम में मग्नों सरशार,

मुझे अपनी भक्ति का वर दीजियेगा ।

मैं बहरे अलम में बहा जा रहा हूँ,

मुझे डूबने से बचा लीजियेगा ।

मैं निर्धन है, निर्बल हूँ, कामी हूँ फोधी,

बने जैसे मुझको निभा लीजियेगा ।

हे स्वामी हों जिस काम से आप राजी,

वही काम मुझसे करा लीजियेगा ।।

हे सत्गुरु स्वामी दया कीजियेगा

मुझे अपने चरणों की रज दीजियेगा

(6)

राखत आये लाज जनन की।

राखी मीरा नारि अहिल्या,

लाज विभीषण चरण गिरिन की ।।

ध्रुव प्रहलाद बिदुर सुधि राखी,

द्रुपद सुता के चीर हरण की।

गोपी, ग्वाल, बाल, ब्रज-बनितन,

राखी सुधि गिरि नखन धरन की ।।

सोई लाज प्रभु राखन आइहैं,

रूप कुंवरि के सब गह जन की ।।

(7)

हे मेरे गुरुदेव करुणासिन्धु, करुणा कीजिये ।
हूँ अधम आधीन, अशरण, अबशरण में लीजिये । हे मेरे . . . . .
खा रहा गोते हूँ मैं, भव सिन्धु के मझधार में ।
आसरा है दूसरा न कोई, अब मेरा संसार में ।। हे मेरे.....
मुझ में है जप-तप न साधन और नाहीं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी, और बस अभिमान है ॥ हे मेरे.....
पाप बोझे से लदी नैया भंवर में जा रही ।
नाथ दौड़ो अब बचालो, जल्द डूबी जा रही । हे मेरे.....
आप भी गर सुध न लेंगे, फिर कहाँ जाँऊगा मैं ।
जन्म दुःख से नाथ कैसे, पार कर पाऊँगा मैं ।। हे मेरे.....
सब जगह मैंनें भटक कर ली शरण प्रभु आपकी ।
पार करना या न करना, दोनों मर्जी आपकी ।। हे मेरे.....

(8)

पधारो कुटिया के मेहमान ।। पधारो कुटिया के मेहमान ।।
कैसे स्वागत करें आपका, हम हैं निपट अजान ।।
मधुमेवा पकवान नहीं है, स्वागत का सामान नहीं है ।
फिर भी प्राण पुकार रहे हैं, आवो दया निधान ।।
सखा सुदामा के घर आये, प्रेम रूप मोहन मन भाये ।
यथा भक्त घर आ जाते हैं, भक्त-वछल भगवान ।।
बड़े भाग्य कहते हैं किसको, आज समझ पाये हैं इसको ।
हम गँवार गायें भी कैसे, गुण-गण गौरव गान ।।

अपने चरणों में थोड़ी जगह दीजिये,
हंसते गाते ये जीवन गुज़र जायेगा ।
यदि हो जाये थोड़ी कृपा आपकी,
हर तरफ स्वर्ग ही फिर नज़र आयेगा ।
मानता हूँ दया के मैं काबिल नहीं,
नासमझ और अधम घोरपापी हूँ मैं।
आप तो हैं दयालु दया कीजिए,
दया पाकर ये पापी सुधर जायेगा ।
एक सिवा आपके कौन मेरा यहाँ
अपना मानूँ जिसे और करूँ आसरा ।
आपके आसरे है ये सेवक प्रभु,
आपका नाम जपके ये तर जायेगा।
अब मैं ढूँढू कहाँ और जाऊँ किधर,
हैं मेरे पास ही आप हैं ये खबर ।
मन के मन्दिर में मेरे चले आइये,
शान्ति आनन्द से मन ये भर जायेगा ।
आप सब जानते हैं, छुपाया है क्या,
आपके दर्श की है मुझे लालसा।
प्रभु! आशीष दें पूरी हो कामना,
पा के आशीष जीवन संवर जाएगा।

(10)

सेवक पड़ी मैं दाता, करुणा बनाये रखना,
चरणों में मुझको अपने, गुरुवर लगाये रखना।
अपमान,मान सुखदुख,परवाह न इसकी हो कुछ।
इन झंझटों से मुझको, हरदम बचाये रखना।
डूबा जहाज़ मेरा, संसार के भंवर में,
मल्लाह अब बनो तुम, मझधार के खिवैया।
जल्दी से दो सहारा, मझधार में है नैया,
मल्लाह प्रभु बनो तुम, पतवार के खिवैया।
ऐसी कृपा हो मुझ पर, मन दृढ़ रहे निरन्तर,
भक्ति में अपनी मुझको, पुख्ता बनाये रखना।
दिल से भुला न देना, मन से हटा न देना,
इस दासी को हमेशा, बस अपने साये रखना।

(11)

मोहे अपनी शरण में ले लो राम।
लोचन मन में जगह न हो तो, चरण कमल में लेलो राम॥
जीवन जीते जाल बिछाया, रच के माया नाच नचाया।
चिन्ता मेरी तब ही मिटेगी, जब चिन्तन में लेलो राम।।
तुमने लाखों पापी तारे, मेरी बार क्यों बाज़ी हारे,
मेरे पास न पुण्य की पूँजी, जो पूजन में ले लो राम।
घरघर अटक, दरदर भटकूँ, कहाँ कहाँ अपना सर पटक।
जीवन जीते मिलो न मुझको, मुझे मरण में लेलो राम।

(12)

प्यारे दर्शन दीज्यो आय, तुम बिन रहयो न जाये।

जल बिन कमल चन्द बिन रजनी, ऐसे तुम देख्यो बिन सजनी । आकुल व्याकुल फिरूँ रैन दिन, बिरह कलेजो खाय ।। प्यारे.....

दिवस न भूख नींद नहीं रैना, मुख सूँ कहत न आवे बैना ।

कहा कहूँ कछु कहत न आवे, मिलकर तपन बुझाय ।। प्यारे....

मत तरसावो अंतरजामी, आन मिलो किरपा कर स्वामी ।

मीरा दासी जनम जनम की पड़ी तुम्हारे पाँय ।। प्यारे.....

(13)

क्या निराली शान है, गुरुदेव के दरबार में।

खुले हाथों ही दया का दान इस दरबार में ।। क्या.....

तर रहे कितने पतित, शठ, ज्ञान-शून्य सुधर रहे

भर रहे शुचि शांति सौरभ, गुरुनाम के आधार में ।। क्या....

जिसने देखा है वही है, जानता इस बात को,

कह नहीं सकते कि क्या, जादू है इनके प्यार में । क्या...

कीर्ति, गति, मति, वृद्धि, वैभव जिसको जो कुछ है मिला,

गुरु कृपा से ही सुलभ, सब कुछ हुआ संसार में। क्या ...

प्रेममय भगवान प्रियतम, हृदय के अतिशय सरल,

रीझ जाते हैं पतित के, तनिक से उद्गार में ।। क्या....

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन् ।
संभालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन् ।।

न हम में बल है, न हम में बुद्धि,
न हम में साधन न हम में भक्ति ।

तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन् ।

जो तुम पिता हो तो, हम हैं बालक,
जो तुम हो स्वामी, तो हम हैं सेवक।

जो तुम हो ठाकुर, तो हम पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन् ।।

सुना है हम हैं अंश तुम्हारे, तुम्हीं सच्चे हो पिता हमारे ।

अगर ये सच तो क्यूं सुधि बिसारी, दया करो हे दयालु भगवन् ।।

जो हम भले हैं तो हैं तुम्हारे,
बुरे भी हैं तो हैं तुम्हारे,

तुम्हारे होकर भी हैं हम दुखारी, दया करो हे दयालु भगवन् ।

न होगी जब तक दया की दृष्टि
न होगी जब तक कृपा की वृष्टि।

नही कहाओगे न्यायकारी, दया करो हे दयालु भगवन् ।

हमें तो बस टेक नाम की है ,
पुकार ये राधेश्याम की है।

तुम्हारी तुम जानो निर्विकारी, दया करो हे दयालु भगवन् ।

(15)

मेरे देवता मुझको देना सहारा,

कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा ॥।

गुनाहों के दरिया में कश्ती पड़ी है,

मदद कीजिये गुरुवर मदद की घड़ी है।

अगम बहती धारा, न यूझे किनारा, कहीं छूट जाये न...

इशारे से मुझको बुलाती है दुनियाँ,

तेरे रास्ते से हटाती है दुनियाँ।

न समझूँ मैं दुनियाँ का झूठा इशारा, कहीं छूट जाये न...

सिवा तेरे दिल में समाये न कोई,

लगी लौ का दीपक बुझाए न कोई।

तुम्हीं मेरे दीपक, तुम्हीं हो उजाला, कहीं छूट जाये न...

लबों पे हमेशा रहे नाम तेरा,

दिलों में हमेशा रहे ध्यान तेरा।

यही चाहता हूँ. मैं शामो सवेरा, कहीं छूट जाये न....

है स्वार्थ की दुनियाँ, न कोई हमारा,

सिवा तेरे जग में न कोई सहारा।

तुम्हीं मेरी नैय्या, तुम्हीं हो किनारा, कहीं छूट जाये न....

(16)

प्रभु जी मेरे जीवन प्राण अधार,

तुम बिन मेरा और न कोई, देख्या आंख पसार | प्रभुजी-

तुम बिन मेरा और न कोई, तीनों लोक मझांर । प्रभुजी-

मीरा दासी जन्म जन्म की, दीजौ मती बिसार | प्रभुजी...

विनती यही है प्रभुजी, चरणों में शरण देना।
बिगड़ी बनाने वाले, बिगड़ी संवार देना, हमरी भी खबर लेना।।

नित बाँटते हो सबको निज प्रेम और भक्ति,
प्रभु एक बूँद उसकी, हमको भी चखा देना।

हम अक्ल और अहं के चक्कर में फँस रहे हैं,
प्रभु एक दृष्टि अपनी करुणा-कृपा की देना।

दुनियाँ की उलझनों में हम तुमको भुला बैठे,
करुणा निधान तुमतो, हमको न भुला देना।

साये में रह के हमने सीखा अभी न कुछ भी,
हम अनपढ़ों का भगवन कभी इम्तहां न लेना।

हैं पाप बहुत फिर भी चरणों में आ सकेंगे,
है ईश, हमको इसका, विश्वास करा देना।

क्या मोक्ष और मुक्ति, यह ज्ञान नहीं हमको,
हे नाथ, तुम्हीं हमको, निज दास बना लेना।

सेवा में आ भी जाऊँ, यह शक्ति नहीं मुझ में,
हे देव, तुम्हीं बढ़ के चरणों में बिठा लेना।

अब आखिरी समय में, सुध बुध गवाँ चुके हैं,
हे ज्योतिषुँज, अब तो सन्मार्ग दिखा देना।

(18)

मोहि लागी लगन गुरु चरनन की।

चरन बिना मोहे कछुनहीं भावे जग माया सब सपनन की।

भवसागर सब सूख गयो है, फिकर नहीं मोहे तरनन की

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आस गहि गुरु चरनन की |

(19)

है दयामय आपका हमको सदा आधार हो।

आपके भक्तों से ही भरपूर यह परिवार हो।।

छोड़ देवें काम को और क्रोध को, मदमोह को।

शुद्ध और निर्मल हमारा सर्वदा आचार हो।।

प्रेम से मिल मिल के सारे गीत गावे आपके।

दिल में बहता आपका ही प्रेम पारावार हो।

जय पिता जय जय पिता हम जय तुम्हारी गा रहे।

रात दिन घर में हमारे आपकी जयकार हो॥

धन धान्य घर में जो सभी कुछ आपका ही है दिया।

उसके लिए प्रभु आपका आभार सौ-सौ बार हो।

पास अपने हो न धन परवाह उसकी कुछ नही।

आपकी भक्ति से ही धनवान यह परिवार हो॥

(20)

मोहे अपने रंग में रंग दे। ओ रंगरेजा के लाल जी।
बाजन लागी बीन बांसुरी, मिर्गी खरताल जी,
हमरे मन में उठी उमंगे, सुनसुन शब्द स्साल जी।
ऐसी चूनर रंग दे मोरी, नंदबाबा के लाल जी,
ओढ़ जिसे प्रीतम ढिंग जाऊँ, पिया मुख मलूँ गुलालजी,
और रंग सब फीके पड़ गये, देखि हंसे ब्रजबाल जी,
अब तो अपने रंगहू, रंग दे, कर दे जनम निहाल जी,
मोहे अपने...।

(21)

ऊँची मेंडी सत्गुरु की, मोसूँ चढ़यो न उतरयो जाय।
कोई कहियो जी म्हारा मुर्शिद यूँ, मोहे बाँह पकड़ ले जाये।
नक्शबंदिया थारो मेलो ही बिछड़्यो जाय।। थारो...
हम परदेसी पावणां जी, आन कियो विसराम।
भोर भए उठ जावस्यां, हमरे तुम्हरे गांव॥। थारे....
पत्ता टूठ डाल से जी, ले गई पवन उड़ाय।
अबके बिछड़े कबर मिलेंगे, दूर पड़ेंगे जाय।। थारो.....
हाथ जोड़ विनती करूँजी, जो कुछ मरजी होय।
मुर्शिद तुम तो बेगरज हो, गरज पड़ी है मोय | थारो...

(22)

चरणों में तेरे लीन सदा सर्वदा रहूँ, तू मेरा बने और मैं तेरा बना रहूँ 1
तेरी दया की भीख से झोली भरी रहे, हे पूर्ण धनी दर का तेरे मंगता रहूँ ।
तेरी क्षमा के जल से धुलें सर्वपापघोर, निर्मल हो तेरे ध्यान में हरदम रहा करूँ
निजरूप का दर्शन मुझे आके दिखा दे, सरशार तेरे प्रेम से, दाता बना रहूँ।
मेरी ये प्रार्थना है, मेरी ये ही कामना, चरणों से एक क्षण भी तेरे न जुदा रहूँ L

(23)

सत्ग्रुरु तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाये,
सच कहते हैं दाता, किस्मत ही बदल जाये।
सतग्रुरु तेरे चरणों.....
ये मन बड़ा चंचल है, तेरा ध्यान नहीं करता,
जितना इसे समझायें, उतना ही मचल जाये।
सतगुरु तेरे चरणों.....
दाता तेरे चरणों में, नित बरसती है रहमत,
इक बूँद जो मिल जाये, दिल की कली खिल जाये।
सतगुरु तेरे चरणों.....
नजरों से गिराना ना, चरणों में जगह देना,
नजरों से जो गिर जायें, मुश्किल है सम्भल पायें।
सतगुरु तेरे चरणों.....
गुरुदेव मेरे प्यारे, बस इतनी दया करना,,
दरबार में जब आयें, तेरा दर्शन मिल जाए।
सतगुरु तेरे चरणों.....

सत्गुरु तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाये,
सच कहते हैं दाता, किस्मत ही बदल जाये।
सतगुरु तेरे चरणों...
ये मन बड़ा चंचल, तेरा ध्यान नहीं करता,
जितना इसे समझाये, उतना ही मचल जाए।
सतगुरु तेरे चरणों.....
दाता तेरे चरणों में नित बरसती है रहमत ,
इक बूंद जो मिल जाए दिल की कलि खिल जाए।
सतगुरु तेरे चरणों.....
नज़रों से गिरना ना चरणों में जगह देना ,
नज़रों से जो गिर जाएँ मुश्किल है संभल पायें।
सतगुरु तेरे चरणों.....
गुरुदेव मेरे प्यारे बीएस इतनी दया करना,
दरबार में जब आयें, तेरा दर्शन मिल जाए
सतगुरु तेरे चरणों.....

(24)

मेरे रहीम, रहम कर साहिब। मेरे करीम करम कर साहिब॥

मुझ पापी का, पाप छुड़ा दो डूबत नैया पार लगा दो॥

झांझरि नाव, पतवार पुरानी ये डर, मोरे हिय समानो।।

देत दुहाई, सत्गुरु तोरी होय सहाई, विपति में मोरी।।

(25)

सुनेरी मैंने निर्बल के बल राम।

पिछली साख भरूं संतन की, अड़े संवारे काम। सुनेरी मैंने...

जब लग गजबल, अपनो बरत्यो, नेक सरयो नहीं काम।

निर्बल है बलराम पुकारे, आये आधे नाम।। सुनेरी मैंने.....

द्रुपद सुता निर्बल भई ता दिन, तजि आये निजधाम।

दुःशासन की भुजा थकित भई, बसन रूप भये श्याम सुनेरी मैंने.

अप बल, तप बल, और बाहुबल, चौथो बल है दाम।

सूर, किसोर कृपाते सब बल हारे को हरिनाम। सुनेरी मैं.....

(26)

सत्गुरु जी तेरा दर्शन पाकर आँखों में सुरूर आ जाता है।

जब तेरी शरण में पहुँचती हूँ, अपने पे गुरूर आ जाता है।।

तुम दोनों जहाँ की रौशनी हो, भक्तों के दिलों का उजाला हो।

इक झलक तेरी पा जाने से, हर चीज पे नूर आ जाता है।।

जी भर कर तुझको देखने की पूरी ही तमन्ना होती नहीं।

बेताब निगाहों के आगे परदा सा जरूर आ जाता है।

बिगड़ी तकदीर संभलती है, तेरे दरबार पहुँचने पर

बेशक वो बड़ा खुशकिस्मत है, जो तेरे हुजूर आ जाता है।।

(27)

नाम जपन क्यों छोड़ दिया।

कोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया।

झूठे जग में दिल ललचा कर, असल बतन क्यों छोड़ दिया।

कौड़ी को तो खूब संभाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया।

जिहि सुमिरन ते अति सुख पावे, सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया। '

खालस' इक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों छोड़ दिया।

(28)

हमसे अधम अधीन उबारे न जायेंगे,

तो आप दीन बन्धु पुकारे जायेंगे।

जो बिक चुके हैं और खरीदा है आपने,

अब वो गुलाम गैर के द्वारे न जायेंगे।

पृथ्वी के भार आपने बहुबार उतारे,

क्या मुझ अधम के भार उतारे न जायेंगे।

खामोश में रहूँगा अगर आप यह कहें,

अब मुझसे पातकी कभी तारे न जायेंगे।

तब तक न चरण आपके सन्तोष पायेंगे,

दृग 'बिन्दु' से जब तक ये पखारे न जायेंगे।

(29)

बहुत दिनन में प्रीतम आये, भाग भले घर बैठे पाए।

मंगलवार माहि मन राखो, राम रसायन रसना चाखो।

मन्दिर माहिं भयो उजियारा, लै सुरति अपना पीव पियारा ।

कहै कबीर में कछुन कीन्हा, सखी सुहाग राम मोहि दीन्हा ।

(30)

जीवन का मैंने सौंप दिया, सब भार तुम्हारे हाथों में
उत्थान पतन अब मेरा है, सरकार तुम्हारे हाथों में।
हम तुमको कभी नहीं भजते, फिर भी तुम हमें नहीं तजते .
अपकार हमारे हाथों में, उपकार तुम्हारे हाथों में ।।
हम में तुम में है भेद यही हम नर हैं तुम नारायण हो
हम हैं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ।।
कल्पना बनाया करती है, एक सेतु विरह के सागर पर।
जिससे हम पहुँचा करते हैं, उस पार तुम्हारे हाथों में ।।
दृग 'बिन्दु' कह रहे हैं, भगवन दृग नाव विरह सागर में।
मँझधार हमारे हाथों में, पतवार तुम्हारे हाथों में ।।

(31)

तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार उदासी मन काहे को करे
नैया तेरी राम हवाले, लहर लहर प्रभु आप संभाले
हरि आप ही उठायें तेरा भार उदासी मन का.....
काबू में मझधार उसी के हाथों में पतवार उसी के
तेरी हार भी नहीं है तेरी हार उदासी मन काहे....
सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा
डोर सौंप के तो देख एक बार उदासी मन काहे .....
तू निर्दोष तुझे क्या डर है, पग-पग में साथी गुरुवर हैं
जय भावना से लीजिये पुकार उदासी मन काहे....

(32)

एक तुम्ही आधार सत्गुरु, एक तुम्ही आधार -2

जब तक मिलो न तुम जीवन में -2

शान्ति कहाँ मिल सकती मन में,

खोज फिरा संसार, सत्गुरु एक तुम्ही आधार.....

कैसा भी हो तैरनहारा मिले न जब तक शरण सहारा,

हो न सका उस पार सत्गुरु एक तुम्हीं आधार .....

प्रभु जी तुम्ही विविध रूपों में, हमें बचाते भव कूपों से

ऐसे परम उदार सत्गुरु एक तुम्ही आधार..... दुख हारे.

हम आयें है द्वार तुम्हारे, अब उद्धार करो

सुन लो दास पुकार, एक तुम्ही आधार.....

तुम ही हो श्रीराम हमारे, तुम्हीं हो श्रीकृष्ण हमारे,

तुम्हीं हो करतार गुरु जी सत्गुरु एक तुम्हीं आधार.....

अब मैं शरण तिहारी जी।

(33)

मोहे राखो कृपा निधान । अब मैं..

अजामिल अपराधी तारे, तारे नीच सदान

जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी विमान अब मैं ....

और अधम तारे बहुतेरे, भगत सन्त सुजान।

कुबजा नीच भीलणी तारी, जाणे सकल जहान। अब मैं...

कहं लगि कहूँ गिणत नहीं आवे, थकि रहे वेद पुरान ।

मीरा दासी जनम जनम की, सुनिये दया निधान। अब मैं....

भरी कंटकों से ये जीवन की राहें,

ये हो जायें आसां अगर आप' चाहें

घिरा है अंधेरा न मंजिल पता है,

कदम डगमगाते थे राही चला है।

जरा हाथ थामो कि दिल चैन पाए,

ये हो जायें आसां अगर आप चाहें

युगों से चला हूँ, दुखों से घिरा हूँ,1

मिला न सहारा, मैं दर-दर फिरा हूँ।

सुना थाम लेते हो गिरतों की बाहें,

ये हो जायें आसां अगर आप चाहें ।।

लगा है पता ऐसा दरबारे आली,

कि जाये न खाली, कोई सवाली।

बता तेरे दर से, कहाँ और जायें,

ये हो जायें आसां, अगर आप चाहें

यही है तमन्ना, यही आरजू है,

कि तुम सामने हो, यही जुस्तजू है।

कि चरणों में तेरे, मेरे प्राण जायें,

ये हो जायें आसां, अगर आप चाहें

(35)

बहुत कठिन है डगर नाथ, मेरे साथ चलो।

भटक न जायें कहीं नाथ, साथ-साथ चलो

बहुत कठिन है डगर.....

बस एक पल की मुलाकात ही गनीमत है,

कल की किसको है खबर नाथ, साथ-साथ चलो।

बहुत कठिन है डगर.....

गुनाह मेरे बहुत नाथ, यह मैं जानूँ हूँ

आप बख्शंद बड़े, आप मेरे साथ चलो

बहुत कठिन है डगर.....

हुजूर पाक हो तुम, पाक आपका जल्वा

रूह भटकी है बहुत, अब तो साथ चलो।

बहुत 'कठिन है डगर.....

(36)

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

वस्तु अमोलिक दी मेरे सत्गुरु, किरपा कर अपनायो ।

जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।

खरचै न छूटे बाको, चोर न लूटै, दिनदिन बढ़त सवायो ।

सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तरि आयो ।

मीरा' के प्रभु गिरधर नागर हरख हरख जस गायो ।

(37)

ऐसी लाज तुझ बिन कौन करे।

गरीबनवाज गुसइंआ मेरा माये छत्र धेरै । ऐसी लाज....

जाकी छवि जगत को लागे, ताँ पर तू ही करें।

नीच ऊँच करै मेरा गोबिन्द काहू ते न डरै । ऐसी लाज.....

नामदेव कबीर तिलोचन सधना सैन तरै,, कहि

रविदास सुनहुरे संतहु हरि जिउ तें समै सरै । ऐसी लाज....

(3B)

सतगुरु हो महाराज मोपै सांई रंग डारा ।

शब्द की चोट लगी मेरे मन में, बेध गया तन सारा।

औषध मूल कछु नहिं लागे, क्या करे वैद्य विचारा ||

सुर नर मुनि जन पीर औलिया, कोई न पावे पारा।

साहेब कबीर सर्व रंग रंगिया, सब रंग ते रंग न्यारा ।।

(39)

प्रभु जी मेरे अवगुण चित्त न धरो ।

समदर्शी है नाम तिहारो, चाहो तो पार करो।

इक लोहा पूजा में राख्यो, इक घर बधिक परो।

पारस गुण अवगुण नहीं जानत, कंचन करत खरो

इक नदिया, इक बार कहावत, मैलो नीर भरे ।

जब मिलके दोड, एक बरन भये, सुरसरि नाम परो ।

एक जीव, एक ब्रह्म कहावत, सूर श्याम झगये।

अबकि बार मोहे पार लगाओ, नहीं प्राण जात टरो।

प्रभु जी मेरे.....

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो,
जीवन निरर्थक जाने न पाये ।।
यह मन न जाने क्या क्या दिखाये,
कुछ बन न पाया मेरे बनाये ।।
संसार में ही आसक्त रहकर,
दिन रात अपने मतलब की कहकर ।
'के लिये लाखों दुःख सहकर,
यह दिन अभी तक यों ही बिताये।।
वह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ,
अपने हृदय में सद्भाव भर लूँ।
नर-तन हैं साधन, भव सिंधु तर लूँ,
ऐसा समय फिर आये न आये ।।
ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ,
अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।
मैं आपको चाहूँ और पाऊँ,
संसार का भय कुछ रह न जाए।।
हे प्रभु ! मुझे निरभिमानी बना दो,
दारिद्र हर लो दानी बना दो।
आनन्दमय विज्ञानी बना दो,
मैं हूँ कि पथिक यह आशा लगाये ।।

(41)

हे गोविन्द, हे गोपाल, हे गोविन्द राखो शरण
अब तो जीवन हारे । । हे गोविन्द .....
नीर पीवन हेतु गयो, सिन्धु के किनारे,
सिन्धु बीच बसत ग्राह, चरन धरि पछारे ।
चार प्रहर जुद्ध भयो, लै गयो मंझधारे,
नाक-कान डूबन लागे, कृष्ण को पुकारे ।
द्वारिका में शब्द गयो, शोर भयो भारे,
शंख-चक्र, गदा-पदम, गरुड़ लै सिधारे श्री
सूर कहै श्याम सुनो, शरण हैं तिहारे,
अबकी बार पार करो, नन्द के दुलारे ।

(42)

म्हांरो जनम मरन को साथी थाने नाहिं बिसाएँ दिनराती
तुम देवां बिन कल न पड़त है जानत मेरी छाती ।
ऊँची चढ़-चढ़ पंथ निहारू रोय रोय अंखियां राती ।
यो संसार सकल जग झूठो झूठा कुलरा न्याती ।
दोउ कर जोड़यां अरज करत हूँ सुन लीज्यो बाती ।
यो मन मेरो बढ़ा हरामी ज्यूं मदमातो हाथी ।
सतगुरु दस दरियो सिर ऊपर आंकुस दे समझाती ।
पल-पल तेरा रूप निहारुँ निरख निरख सुख पाती ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर हरि चरण चित राती ।

(43)

प्रभु जी संगति सरण तिहारी, जगजीवन राम मुरारी ।

गली-गली के जल बहि आयो, सुरसरि जाय समायो ।।

संगत के परताप महातम, नाम गंगोदक पायो ।

स्वाति बूँद बरसै फन ऊपर, सीस विषै होई जाई ।।

वही बूँद कै मोती निपजै, संगति की अधिकाई ।

तुम चंदन हम रेंड बापुरे, निकट तुम्हारे वासा ।।

संगत के परताप महातम, आवै बास सुबासा ।

जाति भी ओछी, करम भी ओछा, ओछा कसब हमारा ।।

नीचे से प्रभु ऊँच किये हो, कह रैदास चमारा।

(44)

राम का गुनगान करिये, राम का गुनगान करिये।

राम प्रभु की भद्रता का, सभ्यता का ध्यान धरिये, ध्यान करिये।

राम का.....

राम गुण गुण चिरन्तन, राम गुन सुमिरन रतन धन।

मनुजता को कर विभूषित, मनुज को धनवान करिये, ध्यान धरिये ।

राम का...

सगुण ब्रह्म स्वरूप सुन्दर, सुजन रंजन रूप सुखकर ।

राम आत्मा, राम आत्मा, राम का सन्मान करिये। राम धरिये

राम का.....

(45)

दर पै तुम्हारे आये हैं, ठुकराओ या उठा लो ।
करुणा के सिन्धु मालिक, अपना विरद बचा लो।।
दर पै तुम्हारे आये हैं.....

जैसे पतंग नभ में, झोंके बहुत है खाये।
दी ढील बहुत अब तो धागा समेट डालो।।
दर पै तुम्हारे आये हैं.....

दिन रात अपना-अपना कर के बहुत ठगाया।
कोई हुआ न अपना, अपना मुझे बनालो ।।
दर पै तुम्हारे आये हैं.....

मीरा या शबरी जैसा, पाया न हृदय मैंने
जो है दिया तुम्हारा, लो खुद इसे संभालो ।।
दर पै तुम्हारे आये हैं.....

बस याद अपनी दे दो, सब कुछ भले ही ले लो।
विषमय करील पर अब करुणा की सुधा डालो।।
दर पै तुम्हारे आये हैं.....

(46)

रघुवर तुमको मेरी लाज ।
सदा सदा मैं शरण तिहारी, तुम बड़े गरीब नवाज रघुवर.....
पतित उपारन विरद तिहारो, श्रवणन सुनी आवाज रघुवर.....
डाँ तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज रघुवर.....
अघखण्डन दुख भंजन जन के, यही तिहारो काज रघुवर.....
तुलसीदास पर किरपा कीजे, भक्ति दान देहु आज रघुवर.....

(47)

अब तो निभाया सरेगी बाँह गहे की लाज।

समरथ सरणा तुम्हारी हईयाँ सर्व सुधारणा काज। बाँह गहे....

भय सागर संसार अपरबल जामे तुम हो जहाज़ ।।

निराधार आधार जगत गुरु तुम बिन होय अकाज। बाँह गहे....

जुग जुग और भरी भगत की दीनी मोक्ष समाज ॥

मीरा शरण गही चरणन की लाज रखो महाराज। बाँह गहे....

(48)

दरस विज दूखन लागे नैन।

जब से तुम बिछूरे प्रभुजी कबहुँ न पायो चैन ॥

शब्द सुनत छतियां कम्पे मीठे लागे बैन

एक टकटकी पंथ निहारु, भई छमासी रैन। ।

विरह किया कासूं कई राजनी, वह गई करवत नैना ॥

'मीरा' के प्रभु करे मिलोगे, दुखमेटन सुख छैन ।

(49)

राम सुमिर राम सुमिट एहि तेथे काज है।

मायको संग त्याग हरि हू की सरन लाग

जगत सुख मान मिथिओ, सबसा है। राम सुमिर.....

सुपने ज्यों धन पिछान काहे पर करत मान,,

दारू की भीत जैसे बसुधा को राज है। राम सुमिर....

नानक जन कहत बात, बिनसी जै है तेरो गात

छिन छिन करिगयो काल, तैसे आत जातं है। राम सुमिर.....

(50)

भज मन राम चरन सुखदाई।

जिन्ह चरनन से निकसी सुरसरी, संकट जटा समाई ।

जटा संकरी नाम परयो है, त्रिभुवन तारन आई। भज....

जिन चरनन की चरन पादुका, भरत रहयो लब लाई।

सोई चरन केवट धोइ लींने, तब हरि नाव चलाई। भज....

जेहि चरन संतन जन सेवत, सदा रहत सुखदाई।

सोई चरन गौतम ऋषि नारी, परसी परम पद पाई। भज...

दण्डक वन प्रभु पावन कीन्हों, ऋषियन त्रास मिटाई।

सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी, कनक मृगा संग धाई।। भज....

कपि सुग्रीव बन्धु भये व्याकुल, तिन जय छत्र फिराई।

रिपु को अनुज विभीषन निसिचर परसत लंका पाई। भज.....

सिव सन्कादिक अरु ब्रह्मादिक, सेष सहस मुख गाई।

तुलसीदास मारुत सुत की प्रभु, निजमुख करत बड़ाई ।। भज....

(51)

आज मेरे घर प्रीतम आये। आज मेरे घर प्रीतम आये।

रहस-रहस मैं भवन बुहारों, मोतियन अंक भर आये। आज.....

चरण पखार प्रेम रस भर-भर सब साधन बरताऊँ ।।

पाँच सखी मिल मंगल गाओ, राग सुलभ वर पायें। आज ....

करूँ आरती प्रेम निछावन पल-पल बलि-बलि जाऊँ।

कहे कबीर धन भाग हमारे परम पुरख वर पाये ।। आज.....

(52)

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।

दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई।

भाई छोड्या, बंधु छोड्या, छोड्या सगा सोई,

साधुन संग बैठ बैठ लोक लाज खोई।

भगत देख राजी हुई, जगत देख रोई,

असुवन जल सींच सींच प्रेम बेलि बोई।

दधि मथ घृत काढ़ि लियो, डार दई छोई,

राणा विषको प्यालो भेज्यो, पीवत मगन होई।

अब तो बात फैल गई, जाणे सब कोई,

'मीरा' प्रेम लगण लागी, होनी होय सो होई।

(53)

मेरा अवगुण भरा है शरीर, प्रभुजी कैसे तारोगे ।

मीरा या रविदास नहीं हूँ, नानक तुलसीदास नहीं हूँ।

कैसे कहूँ रघुबीर,

प्रभु जी कैसे तारोगे। मेरा अवगुण .....

बार-बार आने जाने से दुनिया के ताने बाने से ।

उलझ गयी तकदीर, पाँव पड़ी जंजीर,

प्रभु जी कैसे तारोगे मेरा अवगुण.....

काम, क्रोध में फंसी हुई हैं, झूठी बोली बोल रही हूँ।

चंचल हुआ शरीर, कैसे उतारूँ तेरी तस्वीर,

प्रभुजी कैसे तारोगे मेरा अवगुण .....

(54)

म्हाने चाकर राखो जी ! हे गिरधारी लाल ! म्हाने चाकर....

चाकर रहयूँ बाग लगायूँ, नित उठ दरसन पाँसू ।

वृन्दावन की कुँज गलिन में, तेरी लीला गाँसू । '

चाकरिया दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची।

भाव-भगति जागीरी पाऊँ, तीनों बातों सरसी।

मोर मुकुट, पीताम्बर सोहे, गल बैजंतीमाला।

वृन्दावन में धेनु धरावे, मोहन मुरली वाला ।

ऊँचे-ऊँचे महल बनाऊँ, बिच-बिच राखूँ बारी।

सांवरिया के दरसन पाऊँ, पहिर कुसुम्बी सारी ।

जोगी आया जोग करन कॅ, तप करने सन्यासी ।

हरी भजन कूँ साधू आये, वृन्दावन के वासी ।

'मीरा' के प्रभु गहिर गंभीरा, हृदे रहो जी धीरा।

आधी रात प्रभु दरसन दीन्हों, जमुनाजी के तीरा।

(55)

ऐसो को उदार जग माहीं ।

बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं ।।

जो गति जोग बिराग जतन करि, नहीं पावत मुनि ग्यानी ।

सो गति देत गीध सबरी कहँ, प्रभु न बहुत जिय जानी ।।

जो संपति दस सीस अरपि करि, रावन सिव पहँ लीन्हीं

सो सपंदा विभीषन कह अति सकुच सहित हरि दीन्हीं ॥

तुलसीदास सब भाँति सकल सुख, जो चाहसि मन मेरो ।

तमाम सह परन कर पाते।

(56)

मन लागो मेरो यार फुकीरी में ।

जो सुख पावो नाम भजन में, सो नाहीं अमीरी मैं।

मन लागो मेरो.....

भला बुरा सबकी सुन लीजे, कर गुजरान गरीबी में,

प्रेम नगर में रहन हमारी, भली बनी आई सबूरी में।

मन लागो मेरो.....

हाथ में कुंडी बगल में सोटा, चारों दिसा जागीरी में,

आखिर ये तन खाक मिलेगा, कहा फिरत मगरुरी में,

कहत कबीर सुनो भई साधो! साहिब मिले सबूरी में।

मन लागो मेरो.....

(57)

पितु मात सहायक स्वामी सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो।

जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो॥।

सब भाति सदा सुख दायक हो, दुख दुर्गुन नाशन हारे हो।

प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उरधारे हो॥।

उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।

भुलिहै हमहि तुमको तुम तो हमरी सुध नाहिं बिसारे हो।।

महाराज महा महिमा . तुमरी समझें बिरले बुधवारे हो।

शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे मन मन्दिर के उजियारे हो।।

यह जीवन के तुम जीवन हो, इन प्रानन के तुम प्यारे हो।

बुमसों प्रभु पाय प्रताप हरि केहि के अब और सहारे हो।

(58)

नाथ मैं थारो जी थारो ।

चोखो, बुरो, कुटिल अरु कामी, जो कुछ हूँ सो थारो ।।

बिगड़यो हूँ तो थारो बिगड़यो, थे ही मने सुधारो

वो तो प्रभु सुधरयो यारो, थाँ यूँ कदे न न्यारो नाथ .....

बुरो, बुरो, मैं भोत बुरो हूँ, आखर टाबर थारो

बुरो कहाकर मैं रह जास्यूँ, नॉम बिगड़सी यारो ।।

यारो हूँ, थारो ही बाजू, रहस्यूँ यारो, थारो नाथ मैं.....

आँगलियाँ मुहँ परै न होवै, या तो आप विचारो

म्हारी बात जाय तो जाओ, सोच नहीं कछु म्हारो ।

मेरे बड़ो सोच याँ लाग्यो, बिरद लाजसी थारो ।। नाथ मैं.....

(59)

जामे आवागमन लागे डोरी, हमारे को खेले ऐसी होरी।

मन सारंगी सुरत मिरदंगी तन को तम्बूरा करोरी, सो मेरी आली

राम नाम के बजत मंजीरा कृष्ण नाम लागी डोरी।

हमारे को.....

काम कोध, मद लोभ मोह की रंगत बसें करोरी,सो मेरी

आली अलख नाम की भर पिचकारी, ज्ञान गुलाल मलोरी।

हमारे को.....

मान मटकिया धर माथे पर, नाहक बोझ धरोरी, सो मेरी आली

मटकी पटक मिलो सतृगुरु से, साँची कबीर कहयोरी, हमारे को....

(60)

गुरु पइयाँ लागू नाम लखाय दीजो रे ।
जनम जनम का सोया मनुआ, शब्दन मार जगाय दीजो रे ।
घट अंधियार नैंन नहिं सूझे, ज्ञान दीप जलाय दीजो रे।
विष की लहर उठत घट भीतर, अमृत बूँद चखाय दीजो रे ।
गहरी नदिया बेगि बहे धारा, केवट पार लगाय दीजो रे ।
'धर्मदास' की अरज गुसई, अब की खेप निभाय दीजो रे ।

(61)

सबसे ऊँची प्रेम सगाई दुरयोधन का मेवा त्यागे,
साग विदुर घर खाई सबसे ऊँची प्रेम सगाई ।
जूठे फल शबरी के खाये, बहुविधि स्वाद बताई।
प्रेम के वश नृप सेवा कीन्ही, आप बने हरि नाई ॥
सबसे ऊँची.....
राजसुयज्ञ युधिष्ठिर कीन्हा, तामे जूठ उठाई।
प्रेम के वश पारख रथ हाँक्यो, भूलि गए ठकुराई ।।
सबसे ऊँची .....
ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दावन, गोपिन नाच नचाई।
सूर क्रूर यहि लायक नाहीं, कहँ लग करों बड़ाई ।।
सबसे ऊँची.....

(62)

तनक हरि चितवौली मोरी ओर

चितवत तुम चितवत नाहीं दिल के बड़े कठोर।

मेरे आसा चितवनि तुमरी और न दूजी ठौर।

तुमसे हमहूँ कब कब मिलोगे हमसी लाख करोर

ऊभी ठाढ़ी अरज करत हूँ अरज करत भयो भोर ।

मीरा के प्रभु हरि अविनासी, देस्यूं प्राण अकोर ।

(63)

गुरुवर मेरे बिन तेरे डूबेगी मेरी नैया

है बीच भँवर में नाव पड़ी, आजा बनके खिवइया ।

बैठे हो आप ऐसे मालूम न हो जैसे,

नैया हमारी भगवन उतरेगी पार कैसे।

इस बेबसी में गुरुवर चुपचाप क्यूँ खड़े हो गुरुवर.....

मुशकिल से मैंने गुरुवर नैया है इक बनायी,

लेकिन भँवर में प्रभुजी कोशिश न काम आई।

मझधार में खड़े हैं तूफानों से घिरे हैं गुरुवर.....

पतवार खेते खेते आखिर मैं थक गया हूँ,

शायद तुम आते होगे थोड़ा सा रुक गया हूँ।

आना पड़ेगा भगवन जिद पे ही हम अहे हैं। गुरुवर.....

नैया को मैंने गुरुवर कर दी तेरे हवाले,

भक्ति की लाज रखना आकर इसे बचा लो।

चारों तरफ अंधेरा नहीं कोई आसरा है। गुरुवर.....

(64)

मन रे परसि हरि के चरण ।

सुभग सीतल कंवल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण |

जिण चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ।।

जिण चरण ध्रुव अटल कीन्हें, राख अपनी सरण।

जिण चरण ब्रह्मांड भेट्यो, नखसिखाँ सिरी धरण ।।

जिण चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम- धरण ।

जिण चरण काला नाग नाथ्यो, गोप-लीला करण ।।

जिण चरण गोवरधन घट्यो, गर्व मघवा हरण |

दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण ।।

(65)

आनन्द ही आनन्द बरस रहा, बलिहारी ऐसे सत्गुरु की।

धन्य भाग हमारे आज हुये, शुभ दर्शन ऐसे सत्गुरु की।

पावन की है आकर भूमि, बलिहारी ऐसे सत्गुरु की।

क्या रूप अनूप पाया है, दर्शन जिनका रोहित चन्दा।

सुरत-मूरत मोहन वाली, बलिहारी ऐसे सत्गुरु की।

क्या ध्यान छटा जैसे इन्द्रघटा, बरसत वाणी अमृतधारा।

वह मधुर मधुर मूरत प्यारी, बलिहारी ऐसे सत्गुरु की।

गुरु ज्ञान रूपी जल बरसा, गुरु धर्म बगीचा लगाय दिया।

खिल रही ऐसी फुलवारी, बलिहारी ऐसे सत्गुरु की।

आनन्द ही आनन्द बरस रहा.....

धूल तेरे चरणों की सत्गुरु, चंदन और अबीर बनी।
मस्तक पर है जिसने लगाई, उसकी तो तकदीर बनी ।।
चरण धूल से बढ़कर जग में, चीज़ कोई अनमोल नहीं।
हर वस्तु का मोल जगत में, इसका कोई मोल नहीं।।
देवता तरसें इस धरती को, यह धरती कितनी पावन ।
जन्म -जन्म के रोग मिटाये, सुख से भर दे यह जीवन।
धूल तेरे चरणों की.....

पार हुई पत्थर की अहिल्या, चरण राम के पाने से।
निर्मल बन गया पम्पासर भी, शबरी के चरण धुलाने से ।।
गुरु चरणों की महिमा गावें , युग-युग से वेद-पुराण ।
काले कौवे हंस बने हैं, चरणों में करके स्नान ।।
धूल तेरे चरणों की,.....

चरणों में गंगा बहती, इन चरणों में स्वर्ग मिले।
इन चरणों में आकर बन्दे, मुरझाया ये कमल खिले ।।
लाखों पत्थर हीरे बन गये, सत्गुरु चरण को पाने से
इन सत्गुरु के चरणों में ही, बसते हैं मेरे चारों धाम ।।
धूल तेरे चरणों की.....

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ।
मैं आ तो गया हूँ, मगर जानता हूँ,
तेरे दर पे आने के काबिल नहीं हूँ।
अता की है तुमने मुझे जिन्दगानी,
मगर तेरी महिमा नहीं मैने जानी।
करजदार तेरी दया का हूँ इतना कि,
करजा चुकाने के काबिल नहीं हूँ।
जमाने की चाहत में खुद को मिटाया,
तेरा नाम हरगिज, ज्यों पर न आया।
गुनाहगार हूँ मैं, खतावार हूँ मैं,
तुझे मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ।
यह माना कि दाता हो, तुम दो जहाँ के,
मगर कैसे झोली फैलाऊँ आगे ।
जो पहले दिया है, वही कम नहीं है,
उसी को निभाने के काबिल नहीं हूँ।
तमन्ना यही है कि, सर को झुका हूँ,
` तेरा दर्श इक बार, जी भर के कर लूँ।
सिवा दिल के टुकड़ों के, ऐ मेरे मालिक,
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ।
मैं फिरता हूँ लेकर गुनाहों भरा दिल,
ठिकाना नहीं है, नहीं कोई मंजिल ।
'श्रीकृष्ण' आके, खुद ही उठाओ,
कि अब आज़माने के काबिल नहीं हैं।

आभार

कहाँ लो तिहारे गुण गाऊँ, मैं प्रभु जी, कैसे बखानें उपकार

कैसे जताउँ आभार.....

सुख भोगों को कंचन काया, कारण त्योहारों को माया ।

प्रेम पगी सात्विक सी रसोई, पाडुन को सत्कार ||

कैसे जताउँ आभार.....

सिर पर छाया से सुख जाते, पुलकी दहरियां अंगना गाते ।

दुख-सुख में संग सखा और बंधु सत्संगी परिवार हमारो

कैसे जताउँ आभार.....

दीन-दुखी के प्रति दी ममता, किंचित सी सेवा की क्षमता।

गुरु की कृपा और चरण शरण से जन्म जन्म का उद्धार ।

कैसे जताउँ आभार.....

भंडारा संपन्न करायो, निर्मल गंग स्नान करायो ।

संत वचन और गुरुबानी का समझायो सत-सार।

कैसे जताउँ आभार.....

शब्द

(1)

ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ ।

उतरि गइओ मेरे मन का संसा, जब ते दरसनु पाइआ ।।

अनबोलत मेरी बिरथा जानी, अपना नाम जपाइआ ।

दुख नाठे, सुख सहजि समाए, अनद अनद गुण गाइआ ।।

बाह पकरि कढि लीने अपुनें, ग्रिह अंधकूप ते माइआ ।

कहु नानक गुरि बंधन काटे, बिछुरत आनि मिलाइआ ।।

(2)

रे मन ऐसो कर संगिआसा।

बन से सदन सबै कर समझद्ध, मन ही माहि उदासा ।।

जत की जटा, जोग को मंजबु नेम के नखन बढाओ।

गिआन गुरु आतम उपदेसहु नाम बिभूत लगाओ।। रे मन..

अलप अहार सुलप सी निंद्रा, दया छिमा तन प्रीति ।

सील संतोख सदा निरबाहियो, हैवो त्रिगुण अतीति ।। रे मन.....

काम क्रोध हंकार लोभ हठ, मोह न मन सिउ ल्यावै।

तब ही आतम तत को दरसे, परम पुरख कह पावै।। रे मन.....

(3)

आवहु मीत पिआरे, मंगल गावहु नारे।

सचु मंगलु गावहु ता प्रभ भावहु, सोहिलड़ा जुग चारे ।

अपने परि आइआ थानि सुहाइआ कारज सबदि सवारे।

गिआन महा रसु नेत्री अंजन, त्रिभुवण रूप दिखाइआ ।

सखी मिलहू, रस मंगलु गावहु, हमघरि साजनु आइआ।

(4)

प्रभ मेरे प्रीतम प्रान पिआरे ।

प्रेम भगति अपनो नाम दीजै, दइआल अनुग्रहु धारे।

सिमरउ चरन तुहारे प्रीतम, रिंदै तुहारी आसा ।

संत जना पहि कर बेनती, मनि दरसन की पिआसा ।।

बिछुरत मरनु जीवन हरि मिलते, जन क दरसनु दीजै ।

नाम अधारु जीवन धनु नानक, प्रश्न मेरे किरपा कीजै ।।

प्रभ जी, तू मेरे प्रान अधारै।

(5)

नमसकार दंडउति वंदना, अनिक बार जाउ बारै।

ऊठत बैठत सोवत जागत, इहु मनु तुझहि चितारै ।

सूख दुख इसु मन की बिरथा, तुझ ही आगे सारै ।

तू मेरी ओट, बल बुद्धि धनु तुम ही तुमहि मेरे परवारै

जो तुम करहु, सोई भल हमरे, पेखिनानक सुख चरनारै।

(6)

दरसन देखि जीवा गुर तेरा, पूरन करमु होइ, प्रभ मेरा ।

इह विनन्ती सुणि प्रभ मेरे, देहि नामु करि अपणे चेरे।

अपणी सरणि राखु प्रभ दाते, गुरु प्रसादि किन विरलै जाते ।।

सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता, चरण कमल वसहि मेरे चीता।

नानकु एक करै अरदासि विसरु नाहि पूरन गुणतासि ।।

(7)

सफल सेवा गोपाल राइ करन करावनहार सुआमी ।
ता ते बिरथा कोइ न जाइ, सफल सेवा गोपाल राई ||
निरधन कर तुम देवहु धना, अनिक पाप जाहि निरमल मना ।
सगल मनोरथ पूरन काम, भगत अपुने कउ देवहु नाम ।।
सफल सेवा.....
रोगी का प्रभ खण्डहु रोगु, दुखीए का मिटावहु प्रभ सोगु ।
निथावे कउ तुम्ह थानि बैठावहु, दास अपने कउ भगति लावहु ।
निमाणे कउ प्रभ देतो मानु, मूह मुगधु होइ चतुर सुगिआबु ।
सगल भइआन का भउ नसै, जन अपने के हरि मनि बसै ।।
सफल सेवा .....
पारब्रह्म प्रभ सूख निधान, ततु गिआनु हरि अंमृत नाम ।
कर किरपा संत टहलै लाए, नानक साधू संगि समाए ।।
सफल सेवा .....

(8)

अब मै कउनु उपाउ करउ ।
जिहि बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परठ। अब मैं.....
जनमु पाइ कछु भलो न कीनो, ता ते अधिक डरउ ।
मनबच कम हरि गुन नही गाए, यह जीअ सोच धरउ ।अब मैं.....
गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ, पसु जिउ उदरु भरत ।
कहु नानक प्रश्न बिरदु पछानउ, तब हड पतित तरउ ।। अब मैं .....

(9)

तुझ बिन कवन हमारा, मेरे प्रीतम प्राण अधारा ।तुझ बिन.....

अंतर की बिन्ध तुमही जानी, तुम ही सजन सुहेले।

सब सुखां मैं तुझ पाए, मेरे ठाकुर अगह अतोले । तुझ बिन....

बरन न साकर तुमरे रंगा, गुण निधान सुखदाते

अगम अगोचर प्रभ अबिनासी, पूरे गुर ते जा तुझ बिन...

भ्रम भउ काट किए निहकेवल, जबते हउमै मारी।

जनम मरण को चूको सहसा, साध संगत दरसारी तुझ बिन ...

चरण पखार करउ गुर सेवा, बारि जाउ लाख बरीआ ।

जेहपरसाद एह भवजलतरेआ, जननानक प्रिअसंग मिरीआ । तुझ....

(10)

प्रभ जू तो कह लाज हमारी।

नीलकंठ, नरहरि नाराइण, नीलबसन बनवारी ।।

परम पुरख परमेस सुआमी, पावन पउन अहारी।

माधव महा जोति, मधमरदन मानमुकंद मुरारी ।।

निरबिकार निरजुर निंद्राबिन, निरविख नरक निवारी।

कि पासिंध काल त्रै दरसी, कुकित प्रनासनकारी।।

धनरपान प्रितमान घराघर, अनविकार असिधारी ।

मतिमंद चरन सरनागति, कर गहि लेहु उबारी ।।

(11)

आजु हमारै मंगलवार, गुरु सेवउ करि नमसकार ।

आजु हमारे महा अनंद, चिंत लयी भेंटे गोविंद

आज हमारे ग्रिहि बसंत, गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअन्त ।।

आजु हमारे बने फाग, प्रभ संगी मिलि खेलन लाग।

होली कीनी सन्त सेव, रंगु लागा अति लाल देव ||

मनु तनु मउलिओ अति अनूप, सुकैनाहि छाव धुप

सगली रूती हरिआ होइ, सद बसंत गुर मिले देव ।।

बिरखु जमिओ है पारजात फूल लगे फल रतन भांति ।

त्रिपति अघाने हरि गुणह गाइ, जन नानक हरि हरि हरि घिआइ ।

(12)

तुम करहु दइआ मेरे साई ।

ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर, सदा-सदा तुथु चिआई। करो दया....

पानी पखा पीसउ संत आगे, गुण गाविन्द जसु गाई ||

साससा समनु नामु सुम्हारे, इहु बिस्राम निधिपाई करो दया....

तुम्हरी किपा ते मोहु मानु छूटै, बिनसि जाइ भरमाई ।

अनद रूप रविओ सभ मधे, जत कत पेखउ जाई। करो दया.....

तुम्ह दइआल किरपाल किपानिधि, पतित पावन गोसाई ।

कोटि सूख आनंद राज पाए, मुखते निमख बुलाई। करो दया.....

जाप ताप भगति सा पूरी, जो प्रभ कै मनि भाई ।

नाम जपत त्रिसना समझी है, नानक त्रिपति अधाई ।। करो दया....

(13)

ऐसी किरपा मोहि करहु ।

सन्तह चरण हमारो माथा, नैन दरसु तनि धरि परहु । ऐसी.....

गुरु को सब मेरे ही अरै बासै, हरिनामा मन संगि धरड़ ऐसी.....

तसकर पंच निवार ठाकुर, सगलो भरमा होमि जरहु । ऐसी.....

जो तुम्ह करहु सोई भल माने, भावनु दुबिधा दूरि टरहु ऐसी..

नानक के प्रभ तुम ही दाते, संत संगि ले मोहि उधरहु । ऐसी.....

(14)

बिसर गई सब तात पराई, जब ते साध संगति मोहि पाई।

ना कोई बैरी न कोई बेगाना, सकल संग हमको बन आई ।।

जो प्रभ कीन्हों सो भल मान्यो, एहि सुमति साध ते पाई।

सब में रमि रहया प्रभ एकहि पेखि पेखि नानक बिगसाई ।।

(15)

तुम हो सब राजन के राजा आपे आप गरीब निवाजा।

दास जान कर किया करहु मुहि हार परा मै आन द्वार तुहि ।

अपना जान करो प्रतिपारा तुम साहिब, मैं किंकर थारा

दास जान, दै हाथ उबारो हमरे सभ वैरिन संघारो ॥

प्रथम धरो भगवत को ध्याना, बहुर करो कविता विधि नाना ।

कृष्ण यथा मति चरित उचाये, चूक होय कब लेहो सुधारो ।।

(16)

मेरे साहिब तूं मै माणु निमाणी । तूं मै माणु निमाणी ।

अरदास करी प्रभ अपने आगे, सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी ।

तुधु थिति आए महा अनन्दा, जिसु विसरहि सो मरि जाए।

दिइआलु होवहि जिसु ऊपरि करते, , सो तुधु सदा थिआए।

चरण धूहि तेरे जन की होवा, तेरे दरसन कउ बलि जाई ।

अंमृत बचन रिंदै उरिधारी, तउ किरपा ते संगु पाई।

अन्तर की गति तुधु पहि सारी, तुधु जेवडु अवरु न कोई।

जिस नो लाइ लहि सो लागै, भगतु तुहारा सोई ।

दुइ कर जोड़ि मागउ इकु दाना, साहिबि तुटै पावा ।

सास सासि नानकु आराधे, आठ पहर गुण गावा। मेरे साहिब.....

(17)

हमरी करो हाथ दे रच्छा, पूरन होय चित्त की इच्छा।

तव चरनन मन रहे हमारा, अपना जान करो प्रितपारा ।।

तुम मम कर सदा पितपारा, तुम साहब मैं दास तिहारा ।

जान अपना प्रभु मुझे निवाज, आप करो हमरे सब काज ।।

(18)

साधो मन का माबु तिआगउ ।

कामु को संगति दुरजन की, ता ते अहिनिसि भागउ ।।

सुख दुखु दोनो सम करि जानै, अउरू मानु अपमाना।

हरख सोग ते रहै अतीता, तिनि जगि ततु पछाना। साधो.....

उसतति निंदा दोऊ तिआगे, खोजै पद निरवाना |

जन नानक इतु खेलु कठनु है, किनहूं गुरमुखि जाना।। साधो....

(19)

गुरुदेव माता, गुरुदेव पिता, गुरुदेव स्वामी परमेसरा ॥ टेक ॥

गुरुदेव सखा, अज्ञान भंजन, गुरुदेव बंधुप सहोदरा। टेक ॥

गुरुदेव दाता, हरिनाम उपदेसे, गुरुदेव मंत्र निरोधरा ॥ टेक ॥

गुरुदेव सांत सत बुद्धि मूरति गुरुदेव पारस परसपरा ।। टेक।।

गुरुदेव तीरथ, अमृत सरोवर, गुरुज्ञान मज्जन अपरम्परा। टेक।।

गुरुदेव कर्ता, सब पाप हर्ता, गुरुदेव पतित पवित करा ।। टेक ॥

गुरुदेव आदि जुगादि जुग-जुग, गुरुदेव मंत्र हृदय जपउ घरा । टेक

ग्रुरुदेव संगत,प्रभुमेल कर किरपा, हम मूढ़पापी जितलगतरा। टेक

ग्रुरुदेव सत्गुरु, पारब्रह्म परमेश्वर, 'गुरुदेव नानक हर नमस्करा ।।

गुरुदेव माता, गुरुदेव पिता, गुरुदेव स्वामी परमेसरा।।

(20)

चरण कमल तेरे धोइ-धोइ पीवा, मेरे सतिगुर दीन दइआला।

पारब्रह्म परमेसर सतिगुर, आपे करणैहारा।।

चरण धुड़ि तेरी सेवकु मागै, तेरे दरसन कउ बलिहारा। चरण.....

मेरे रामराइ, जिउ राखहि तिउ रहिऐ।

तुधु भावै ता नाम्रु जपावहि, सुखु तेरा दिता लहीऐ।। चरण.....

मुकति भुगति जुगति तेरी सेवा, जिसु तूं आपि कराइहि।

तहा बैकूंठु, जह कीरतनु तेरा, तूं आपे सरधा लाइहि ।। चरण.....

सिमरि सिमरि सिमरि नाम जीवा, तनु मनु होइ निहाला।

कुरबाणु जाई उसु वेला सुहावी,जितु तुमरै दुआरै आइआ| चरण.....

नानक कठउ प्रभ भए किपाला, सतगुरु पूरा पाइआ।। चरण.....

सच्चे पातशाह, मेरी बख्श खता, मैं निमाणा,

तू बेअन्त, तेरा अन्त न जाना।

दीन छोड़, दुनी संग लागा, नाम न जपेया तेरा मैं अभागा,

कोई गुण न फलै, नर्क न मैनु झलै, पाप कमाना,

तू बेअन्त तेरा अन्त न जाना। सच्चे.

मैनु लगे ना माया दा जोला, अपने दर दा बना लो जी गोला,

हर दम बन्दगी करां, तेरी हाजरी भरां, जद तक प्राणा,

तू बेअन्त तेरा अन्त न जाना। सच्चे.

तर गये पापी तेरा नाम रटके, कट्ठी आये चौरासी जाप जपके,

विसर नहीं दातार, बख्शो चरणा दा प्यार, नाम जपाना,

तू बेअन्त तेरा अन्त न जाना। सच्चे.

दर तेरे सवाली जो आवे, मुह मंगिया मुरांदा वो पावे।

मै आया शरणी, लालौ अपने चरणी, विरद पहचाना।

तू बेअन्त तेरा अन्त न जाना। सच्चे.....

मैनु स्खना कुसंग तूं बचाके, हरजी रखना गले नाल लाके।

रहो अंग संग मेरे बनालो अपने चेरे, उपकार कमाना,

तू बेअन्त तेरा अन्त न जाना।

सच्चे.....

गुरु गुरू गुरू करि मन मोर, गुरू बिना मैं नाही होर।

गुरू.....

ग्रुर की टेक रहहु दिनु राति, जा की कोई न मेटै दाति।

ग्रुछू परमेसर एको जाणु, जो तिसु भोवै सो परवाणु।॥।

गुरु.....

ग्रुर चरणी जा का मनु लागै। दुखु दरु भ्रमु ता का भागै।

गुर की सेवा पाए माबु, गुर ऊपरि सदा कुरबानु।

गुरु.....

गुर का दरसनु देखि निहाल, गुर के सेवक की पूरन घाल।

गुर के सेवक कउ दुखु न बिआपै, गुर का सेवकु दहदिसि जापै।

गुरु...

गुर की महिमा कथनु न जाइ, 'पाखहमु गुरु रहिआ समाइ।

कहु नानक जा के पूरे भाग, गुर चरणी ता का मनु लाग।

गुरु...

जपुजी साहब

"एक ऑकार सतिनामु, करता पुरखु निरभउ,

निरवैठ, अकाल मूरति, अजूनी, सैभं गुर प्रसादि"

अर्थ- एक ओंकार - अकाल पुस्ख (परमात्मा) एक है। उसके जैसा कोई और नहीं है। वो सबमें रस व्यापक है। हर जगह मौजूद है।

सतनाम - अकाल पुरख का नाम सबसे सच्चा है। ये नाम सदा अटल है, हमेशा रहने वाला है।

करता पुरख - वो सब कुछ बनाने वाला है और वो ही सब कुछ करता है। वो सब कुछ बनाके उसमें रस-बस गया है।

निरभउ - अकाल पुरख को किसी से कोई डर नहीं है।

निरवैर - अकाल पुरख का किसी से कोई बैर (दुश्मनी) नहीं है।

अकाल मूरत - प्रभु की शक्ल काल रहित है। उन पर समय का प्रभाव नहीं पड़ता। बचपन, जवानी, बुढ़ापा मौत उसको नहीं आती। उसका कोई आकार कोई मूरत नहीं है।

अजूनी - वो जूनी (योनियों) में नहीं पड़ता। वो ना तो पैदा होता है ना मरता है।

स्वैंभं(स्वयंभू) - उसको किसी ने"नः तो जन्मे दिया हैं, न बनाया है वो खुद प्रकाश हुआ है।

गुरप्रसाद - गुरु की कृपा से परमात्मा हृदय में बसता है। गुरु की कृपा से अकाल पुरख की समझ इन्सान को होती है।

आदि सचु जुगादि सचु।।

है भी सचु।। नानक होसी भी सचु ।।

अर्थ- ऐ नानक! अकाल पुरुष आदि काल से अस्तित्व वाला है, यूगों के आरम्भ काल से अस्तित्व वाला है। इस काल में भी विद्यमान है और आगामी काल में भी अस्तित्व युक्त रहेगा।

सोचे सोचि न होवई जे सोपी लख वार

थुप्रै चुप न होवई जे लाह रहा वितार।।

अर्थ:- यदि मैं लाख बार भी (स्नानादि द्वारा शारीरिक) शुचि यूँ तो भी इस प्रकार सुधि रखने से मेरे मन में) पवित्रता नहीं रह सकती। यदि में शारीरिक अखण्ड-समाधि लगाए यूँ तो भी इस प्रकार) मौन रहने से मन शान्त नहीं रह सकता।

भुरिवआ भुरव न उतरी जे बंना पुरिआ भार।।

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ।।

अर्थ:- यदि मैं सब भुवनों के पदार्थों के कर भी तो भी तृष्णा के आधीन रहने से मेरी तृष्णा मिट नहीं सकती। यदि मेरी बुद्धि में हज़ारों और लाखों चतुराईयां (प्रज्ञावाद) भी हो तो उन में से एक चतुराई भी मेरे संग प्रलोक नहीं जायेगी।

किव सचिआरा होइए, किव कूडै तुटै पालि।।

हुकमि रजाई चलणा, नानक लिरिवआ नालि।।

अर्थ- परमात्मा से जीव के भेद को मिटाने का एक ही उपाय है कि जीव उसकी रजा (नियंत्रण) में रहें, यह सिद्धान्त अनादी काल से ही परमात्मा ने जीवों के लिए जरूरी समझा है। कोइ पुत्र पिता की आज्ञा में रहे तो उसे दुलार प्राप्त होता है और यदि न रहे तो परस्पर भेद बढ़ता ही जाता है।

गजलें

(1)

तेरा नाम खालिके दो जहाँ, तू खुदावे अर्को मुकाम है।
तेरी बन्दगी में हैं सर झुके, तुझे लाख-लाख सलाम है।

तू ही है हरम, तू ही तकदा, नहीं फर्क दोनों में कुछ जय ।
यहाँ भरदे में है निहां ख़ुदा, वहाँ जलवागर वो ही राम है

पियूँ शौक से क्यों न मैं इसे, कि भरा है वादये इश्क से
जो दिखाये जल्वये दिलरुबा, ये वो जाम है, ये वो जाम है।

तेरी याद कैसे भुला में, तुझे छोड़के कहाँ जाऊँ मै।
तेरी याद दिल में है ऐ खुदा, तो जुबाँ पे तेरा ही नाम है।

मुझे देख लुत्फो करम से तू, ये ही एक है मेरी आरजू
यही सुनके आया हूँ दर पे तेरे तेरा फैज खाक पे आम है।

नहीं हमदम अच्छी फलते कि अजल है सरपे खड़ी हुई।
करो तुम भी अब तो ख़ुदा-2, कि दुआ का वक़्त है शाम है।

(2)

ऐ साहिबे जुल, फल्लो करम रहमत कर रहमत कर

ऐ बताये हर रेजो अलग रहमत कर रहमत कर।

सबकत है सदा गज़ब पे रहगत को तेरी ।

तुझे तेरी रहमत की कराण रहमत कर रहमत कर।

इक चश्मे इनायत का बंदा भी सवाली है।

ऐ रहमो करम वाले, दामन मेरा खाली है।

जिस दिन से नज़र तुमने, गुलशन से हटा ली है।

उस रोज़ से फलों में है व लाती है।

परदे में तबस्सुम के हर चोट छुपा ली है।

दीवानों ने जीने की, क्या यह निकाली है।।

गुलशन के निगेहबाँ उठ, गुलशन की हिफाजत कर

दीवानों ने अब अपनी जंजीर सम्भाली है।

हर शाम चिराग़ा है, पलकों की मुठेरों पर

अश्कों की नवाजिश है, हर रात दिवाली है।

दुनियाँ के खजानों में मिलने की नहीं चारों

हमने लये जाजां से वो चीज चुराली है।

क्या जानें "फ" उसको, कब मय की जरूरत हो।

बारिश के लिए हमने बोड़ी सी बचाली है। ऐ रहमो करम वाले

(3)

तेरे दामने करम का जिसे मिल गया सहारा।

एक मौजे फा खुद बन गई किनारा।

यह अधाएं दिलनवाजी कोई मेरे दिल से पूछे।

वही आ गये मदद को, मैंने जिस जगह पुकारा।

मेरी लाज रखने वाले, मेरे बाल सहने वाले।

तेरा कम हैदर कीकत, मुझे जिन्दगी से प्यारा ।।

मेरे जानने दिल के मालिक यही दिल की आरज है

तेरा जल्दा सब हो, मैं किया करूँ नज़ारा ||

मेरे पीर की हिमाल मेरे साथ है तो बस है।

तेरी बेकरों में मंजिले, मुझे हर दर किनारा।

(4)

हर लम्हा तुझको याद किये जा रहा हूँ में

से ले के तेरा नाम जिये जा रहा हूँ मैं ।।

तसवीर रख के तेरी तसपुर के सामने

सिजदे हजार बार किये जा रहा हूँ मैं ।।

बाकी नहीं है कुछ भी तुज जाने वार के

उसको भी नजरे यार किये जा रहा हूँ मैं ।।

ऐ जौक किसे कहते हैं परवानये निजात

दुनियां से तेरी याद लिये जा रहा हूँ मैं ।।

होशो हवास अपने सलामत रहें, जिगर

मंजिल से पूछ लूँगा, विवर जा रहा हूँ मैं।।

(5)

नका चश्म मुसलसिला उठाई जाती है,
मैं पी चुका हूँ, मगर फिर पिलाई जाती है।
झलक दिखाके जो बिजली गिराई जाती है,
ये आग खुद नहीं लगती लगाई जाती है।
वो अपनी मस्त निगाहों को कुछ नहीं कहते,
हमें शराब की तोहमत लगाई जाती है।
हमारे दर्द से जब उनको वास्ता ही नहीं,
तो फिर नजर से नजर क्यूँ मिलाई जाती है।
हमारी कश्तिये हसरत का अब ख़ुदा हाफिज
सम्हालता हूँ मगर नई जाती है।

(6)

तुम जाने आरजू हो, तुम रहे जिन्दगी हो।
कब तक छुपे रहोगे, एक दिन तो रूबरू हो ।
जिस खाक पर पड़े हों, नक्शेकदम तुम्हारे
मैं चाहता हूँ मेरा उस खाक से बचू हो।।
मैं खुशनसीब हूँ, जो दर मिल गया तुम्हारा।
फिर क्यों मेरी जी को करने की जुस्तजू हो।
मैं रिन्द तो नहीं हूँ, लेकिन ये सोचता हूँ।
दो चार घूँट पी लें, साकी जो मेरा तू हो ।
तुम जाने आरजू हो.....

सरापा दीद बनकर हसरते दीदार में आये,
मोहब्बत आजमाने मंजिलें दीदार में आये.
जिसे महदूद बनना हो, निगाहे यार में आये,
जिसे दावा मुहब्बत हो, तेरी सरकार में आये,
ख़ुदा जिसको न मिलता हो, तेरे दरबार में आये ।।
सरापा इश्क में डूबी दुआओं का ये मरकज है,
चमन फिरदौस रहमत की घटाओं का ये मरकज है.
बड़ी दिलकश मोहब्बत की अदाओं का वे मरकज हैं,
गुलिस्ताने हकीकत की फिजाओं का वे मरकज है,
जिसे फूलों में रहना हो, वो इस गुलज़ार में आये ।।
ये वो मरकज है जिसपे जिन्दगी तकमील पाती है.
खुदाई बाखुदा खुद बाअदब इस दर पै आती है,
यहाँ पर शान रहमत हर घड़ी चक्कर लगाती है,
वहाँ ऐलाने हक होता है, दुनियाँ सर झुकाती है,
खरीदारे मुहब्बत क्यूँ न इस बाजार में आये ।।

(8)

मालिक तेरी रज़ा रहे और तू ही तू रहे।

मुझको तेरी तलब, तेरी आरजू रहे ।।

"मुझको न दीन, और न दुनियाँ की आरजू ।

तेरा ख्याल और तेरी जुस्तजू रहे ।।

तौफीक अता कर मेरा सजदे में सर झुके

तेरा ख्याल, तेरा अमल, तेरी बू रहे ।।

कोई गिला किसी का, न दिल में रहे मेरे ।

दुनियाँ भी छूट जाये, फक्त तू ही तू रहे।

तेरे करम से प्यार तेरा, इस तरह मिलें।

दुनियाँ को भूल जाऊँ, तेरी रंग बू रहे।

बख्शी हजार नेमतें, बस एक और दे

लवरेज तेरे प्यार से, जामो सुबुं रहे।

जब लौंजी में जान, रंगों में लहू रहे।

अपने को भूल जाऊँ, फक्त तू ही तू रहे ।।

(9)

शराबे उल्फत पिला दे साकी, अजाब कैसा, सबाब कैसा।

तू मस्त मुझको बना दे साकी, अजाब कैसा, सबाब कैसा ।।

रहे ये मैखाना तेरा कायम, चले ये दौरे शराबे दायम।

हमें भी अब तो छका दे साकी, अजाब कैसा, सबाब कैसा ।।

शराब ऐसी पिला दे साकी, रहे खबर और न होश बाकी।

दुई का पर्दा उठा दे साकी, आजाब कैसा, सबाब कैसा ।।

पिला दे साकी शराबे वहदत, खिला के मुझको कबाबे उल्फत ।

तू रिब्द मुशरिक बना दे साकी, अजाब कैसा, सबाब कैसा ।।

अजल से भूखा शराब का था, खुदा खुदा करके आज पाया।

सुबू को मुँह से लगा दे साकी, अजाब कैसा, सबाब कैसा ।।

रहे सलामत शराबखाना, कि मय परस्तों का है ये ठिकाना ।

जो तुझसे माँगे पिला दे साकी, अजाब कैसा, सबाब कैसा ।।

(10)

सना बशर के लिये हैं, बशर सना के लिये।

तमाम हम्द सज़ावार हैं, ख़ुदा के लिये।

अता के सामने याब, खता का जिक ही क्या।

कि तू अता के लिये है, बशर खता के लिये।।

क्या रंग लाई है रहमत, तेरी सरे महशर

कि बेखता भी तरसने लगे. खता के लिये ।।

तेरे करम ने वहीं बढ़के, दस्तगीरी की।

गुनाहगारों के जब हाथ उठे, दुआ के लिये ।।

(11)

मेरे साकिया बता दे, वो शराब कौन सी है।

जिसे पी के सारी दुनियाँ, तेरे दर पे झूमती है।

तेरी हर नज़र मुहब्बत, मेरी हर नज़र कयामत ।

मैं खराबे जिन्दगी हूँ, तू बहारे जिन्दगी है ।।

तू हज़ार बार ठुकरा, मेरा सर यहीं झुकेगा।

तेरे दर पे सिज्दा करना, मेरी शाने बन्दगी है ।।

मैं जानता नहीं हूँ, कुछ दीन और मजहब ।

तुझे याद कर के रोना, आजिज की बन्दगी है ।

तेरी बन्दगी की लज़्ज़त, कोई मेरे दिल से पूछे।

तुझे कैसे भूल जाऊँ, तू हवीये ज़िन्दगी है ।।

न अलम मेरा अलम है, न खुशी मेरी खुशी है।

मझे जिस तरह से रक्खे, तेरी बंदा परवरी है।।
मेरा दामने गदाई, तेरे आगे क्यूँ न फैले।
तू मताए दो जहां है, तेरे घर में क्या कमी है।
तेरा एहतराम साया, कहीं मुझसे खो न जाये।
अभी सामने न आना, अभी दौरे बेखुदी है।।
जरा चिलमनें उठा दो, गमे आशिकी का सका।
इन्हीं चिलमनों में पिनहा, मेरा राजे ज़िन्दगी है ।।
मेरे दिल में है जो वहशत, ये जुनून भी है इबादत ।
जहां सर झुके न उठे, ये नमाजे आशिकी है।

(12)

जहाँ रक्स करती है रूहे तमन्ना, उसी हद्दे मंजिल को मैं चाहता हूँ
सलामत रहे मेरा जज़्बे मुहब्बत, तुम्हें ढूँढता हूँ तुम्हें चाहता हूँ।
तेरी याद तसकीने दिल बन गई है, तेरा गम मेरी जिन्दगी बनगई है
करूँ तुझपे कुरबान हर शादमानी, किमिटमिटतुम्हारा हुआचाहता हूँ
कहाँ ले के आई है मौजे मुहब्बत, उभरना यहाँ कुछ है आशिकी में
मेरे दिल की यारब दुई अब मिटादे, तुम्हारी कसम मैं तुम्हें चाहता हूँ
माना अधूरी मेरी साधना है, अधूरी है पूजा, और आराधना है।
बुरा हूँ, भला हूँ, मगर हूँ तुम्हारा, यही है सबब जो तुम्हें चाहता हूँ

(13)

ये समझकर तेरे दर पे आये हैं हम यहाँ बिगड़े मुकद्दर सँवर जायेंगे।
मेरे आका अगर तूने ठुकरा दिया, फिर बता तेरे सायल किधर जायेंगे।
हसरते दीद के कितने परवाने हैं, नूरे रौशन से पर्दा हटा दो जरा ।
यही आलम रहा तो मैं कहता हूँ, तेरे दीवाने घुट-घुट के मरजायेंगे।
लाख तूफां खलीदां ने घेरा तो क्या, मेरे आका यही है अकीदा मेरा ।
तेरे दामन का जिसको सहारा मिला, डूबते-डूबते वो उभर जायेंगे।
अपना कोई नहीं, गम के मारे हैं हम,आपके दर पे फरियाद लायें हैं हम।
हो निगाहे करम वरना चौखटपेहम, आपका नाम लेले के मर जायेंगे।
भर दे झोली मेरी दीद की भीख से मेरी बिगड़ी बना सदकये हुस्न से।
तेरे दर से अगर खाली उठेंगे हम, ताना देगा जमाना, किधर जायेंगे।

(14)

साए में तुम्हारे हैं, किस्मत ये हमारी है।
कुर्बान दिलों जाँ है, क्या शान तुम्हारी है।
नक्शा बड़ा दिलकश है, सूरत बड़ी प्यारी है।
जिसने भी तुम्हें देखा, सौ जान से वारी है।
तुमने तो हज़ारों की किस्मत ही सँवारी है।
एक बार जरा कह दो, अबकी तेरी बारी है ।।
हम लाख बुरे ही सही, कहलाते तुम्हारे हैं।
इक नज़रे करम कर दो, क्या शान तुम्हारी है।

फिरदौसे तखय्युल में, तस्वीर तेरी रख कर।
सौ आइने तोड़े हैं, तब जाके उतारी है।।
हम तेरी जफाओं को इल्जाम नहीं देंगे।
तुमने मेरी आँखों में, इक उम्र गुज़ारी है ।।
क्या नज़र करूँ तुमको, क्या चीज़ हमारी है।
ये दिल भी तुम्हारा है, ये जाँ भी तुम्हारी है।।
क्या बात करूँ तुमसे, क्या अर्ज करूँ तुमसे ।
सब आप पे रौशन है, हालत जो हमारी है।

(15)

मैं तुझे पाने की हरदम जुस्तजू करता रहूँ।
सबसे तेरे र की, मैं गुफ्तगु करता रहूँ।।
रात दिन करता रहूँ, तेरी नमाजे इश्क में।
दिल में सिजदा, आँसुओं से, मैं वजू करता रहूँ।।
राजे हक की नेमतें बख्शी हैं जो तूने मुझे।
रात दिन उनकी नुमाइश, चारसू करता रहूँ ।।
दिल की यह चाहत है, दिल में तू रहे इसके सिया ।
हो न कोई आरजू, यह आरजू करता रहूँ ।।
तू बनूँ, तू तू रहे, मुझमें समा जा इस तरह ।
भूल जाऊँ खुद को मैं, और तू ही तू करता रहूँ ।।
रात दिन ऐसे रहूँ, मैं तुझ से महवे गुफ्तगू ।
हर नफस में तुझ को ही में रूबरू करता रहूँ।

(16)

रंगे महफिल जमा गया कोई बात बिगड़ी बना गया कोई।
रस्मे उल्फत सिखा गया कोई, बज़्मे हस्ती पे छा गया कोई।
बख़ुदा मस्त-मस्त आँखो से, जो न पी थी पिला गया कोई।
दिल की दुनियाँ उजाड़ सी क्यों है, क्या 'सेचला गया कोई।
ता कयामत किसी तरह न बुझे, आग ऐसी लगा गया कोई।
बाद मुद्दत गले लगा के ऐ जौक, हँसते-हँसते रुला गया कोई।
हथ तक भी न मिटा सके दिल से, दाग ऐसे लगा गया कोई।
वीरांए दिल के खास गोशों में, शम्माऐं हसरत जला गया कोई।
तू ही ऐ मौत अब करम फरमा, मुझसे दामन बचा गया कोई।

(17)

दिल तो है अब बराये नाम दिल में शगुफ्तगी नहीं।
साज है पर सदा नहीं, शमा है रोशनी नहीं ।।
अब कोई बात भी मेरी माना कि होश की नहीं।
आप को भूल जाऊँ मैं ऐसी तो बेखुदी नहीं।
तेरे करम से बेनियाज़ कौन सी शह मिली नहीं।
झोली ही अपनी तंग है तेरे यहाँ कमी नहीं ।।
आशिकी और बगौर होश कुफ है आशिकी नहीं।
जिस में न हो जनूँ नसीब वह कोई जिन्दगी नहीं ।।
तीर पे तीर खाये जा यार से लौ लगाये जा
जहर मिले तो जहर को पी इश्क है दिल्लगी नहीं ।।
हुस्न की बात मान ले हुस्न से नाज़ को न तोड़।
उनकी खुशी से काम कर तेरी खुशी खुशी नहीं ।।

(18)

अब रंज से खुशी से बहारों ख़िज़ा से क्या
महवे ख़याल यार है हमको जहाँ से क्या
कोई चले चले न चले हम तो चल पड़े
मंजिल की जिसको धुन हो उसे कारवाँ से क्या
हमने चिराग रख दिया तूफां के सामने
पीछे हटेगा इश्क किसी इन्तहा से क्या
ये बात सोचने की है वो हो के मेहरबां
पूछेंगे हाले दिल तो जुबां से कहोगे क्या

(19)

हम चल रहे थे सामने, कोई नक्शे पा न था ।
राहें बहुत थीं सामने, मगर रास्ता न था। हम चल रहे....
तेरी गली की खाक से, जन्नत मिली हमें।
कैसे कहें कि इसका, कहीं ज़िक ही न था ।।
राहें बहुत थी सामने, मगर रास्ता न था।। हम चल रहे....
यह तो करम है आपका, दिल मैं पनाह दी।
वरना तो अपना कोई कहीं, आसरा न था ।। चल रहे.....
राहें बहुत थीं सामने, मगर रास्ता न था। हम चल रहे...
तुम मिल गये हो अब यह नसीबों की बात है।
हम ये अकेले और तो, बस कारवाँ ही था।।
राहें बहुत थी सामने, मगर रास्ता न था हम चल रहे.....

(20)

दिल में अब दर्द मौहब्बत के सिवा कुछ भी नहीं।
ज़िन्दगी मेरी इबादत के सिवा कुछ भी नहीं ।।
ऐ खुदा मुझ से न ले, मेरे गुनाहों का हिसाब ।
मेरे पास अश्को नदामत के सिवा कुछ भी नहीं।
मैं तेरे बारेगडे नाज में क्या पेश करूँ।
मेरी झोली मुहब्बत के सिवा कुछ भी नहीं।
वो तो 'मीत' कर मुझे मिल ही गए राहते वरना ।
जिन्दगी रंजो मुहब्बत के सिवा कुछ भी नहीं ।।

(21)

न ख्याले दीनों ईमां न ख्याले बन्दगी है,
तुझे भूलकर भी जीना, ये कैसी ज़िन्दगी है
तेरे दर पे सिजदा करना, तुझे याद करके रोना,
यही है नमाज मेरी, यही मेरी बन्दगी है
तू हज़ार बार ठुकरा, मेरा सर यहीं झुकेगा,
तेरे दर पे सिजदा करना, मेरा फर्जे जिन्दगी है ।
माना कि पुरखता हूँ, पर हूँ तो तेरा बंदा,
गर तू मुझे निभाले, तेरी बंदा परवरी है।
अलम मेरा अलग है, न खुशी मेरा खुशी है,
जिस हाल में तू रखे, तेरी बंदा परवरी है।
तू निगाहे रूहे परवर, तू बहारे आशिकी है,
तेरा देखना इबादत, तेरी याद जिन्दगी है।

(22)

हर वक्त आ मेरे ख्यालों में, कि मेरी जिन्दगी में कभी गम नहो।
मुझे एक बार नवाज़ दे, कि तेरे चरणों में सदा लीन रहूँ ।।
तू बहा रहीमों करीम है, मुझे ये सिफत भी अता करें।
तुझे पाने की मैं दुआ करूँ, तो दुआ में मेरे असर हो ।।
मेरे पास मेरे हबीब आ, जरा और दिल के करीब आ ।
तुझे धड़कनों में बसा लूँ मैं, कि हर वक्त नज़रों में तू रहे ।।
तेरे चरणों की धूल चूमकर, तेरे हाथों को में थामकर ।
यूँ ही साथ-साथ चलें सदा, कभी खत्म अपना सफर न हो।

(23)

कौन कहता है तुझे मैंने भुला रखा है।
तेरी यादों को कलेजे से लगा रखा है।।
तूने जो दिल के अंधरे में जलाया था कभी।
वह दिया आज भी सीने में जला रखा है ।।
लब पे आहें भी नहीं आँख में आँसू भी नहीं।
दल में हर राज़ मोहब्बत का छुपा रखा है।
देखजा आके महकते हुये बागों की बहार ।
दिल में हर दाग मुहब्बत का छिपा रखा है।
नूर ही नूर है ताहद्दे नज़र आज की रात ।
किसने परदा रुखे रौशन से हटा रखा है।।

(24)

फिरे ज़माने में चार जानिब, सनम सरापा तुम्हीं को देखा।
हसीन देखे जमील देखे, पर एक तुमसा तुम्हीं को देखा ।।
न देखा महबूब कोई ऐसा, जो आशिकों पर हो महवो शैदा।
न खुदनुमा हो न बेवफा हो, नई सिफत का तुम्हीं को देखा ।।
अगरचे इस गुलशने जहां में, हजार गुल हैं, बरंगे दीगर ।
मगर बखुश्बुऐ रूह-परवर, सदा महकता तुम्हीं को देखा ।।
जो मांगा हमने दिया वो तुमने, कहा जो हमने किया वो तुमने।
कहूँ न गर झूठ सच तो यह है, जहाँ में अपना तुम्हीं को देखा।
फिरे ज़माने में हर तरफ हम, मगर दिलारा तुम्हीं को देखा।

(25)

समझ सकें हम तुझे खुदाया, हमारी नज़रों को वह नज़र दे।
दिया है तूने नफीस तोहफा, कदर करें हम, हमें कदर दे।
समझ सकें हम.....
नज़र अगर जाये मेरे मौला, तो जाये अपनी ही खामियों पे ।
न गंदगी पे निगाह डालें तेरे सरोवर के हंस बनके, चु
नें सदा हम गुणों के मोती ओ मेरे दाता, हमें यह वर दे।
समझ सकें हम.....
ओ शहनशाह, दो जहां के वाली, वचन को समझें
वचन को मानें। चलाये राहों पे तू ही हमको
हम ऐसे तेरे चरन की मानें फैलाये झोली खड़े हैं गुरुवर,
ओ मेरे मालिक, यह झोली भर दे। समझ सके हम.....

(26)

डरता हूँ मेरे गुरुवर, तेरी याद खो न जाये।
यह नातवाँ मुसाफिर, रस्ते में रह न जाये ।।
रहम करम तेरा है मालिक, कलियाँ जो खिल रही हैं।
यह भीनी-भीनी खुशबू फूलों से धुल न जाये ।।
गुले आशिकी में मुझको, सैयाद तू फसा ले।
देखा करूँ मैं तुझको, मेरा आशियाँ न जाये ।।
हैरत का यह नशा है, दिल जिसमें आ फँसा है।
साकी रहम-रहम कर कहीं यह उतर न जाये ।।
डरता हूँ मेरे गुरुवर..

(27)

नज़र मेहर की हम पे हो जाये मुर्शिद
तो नज़रों को हम भी मिला करके देखें
नज़र से नज़र का ताल्लुक है गहरा
तो गहराई में हम भी जा के देखें

बहुत सो चुके हम गफलत में प्यारे
खुले आँख तो तुम को पा कर के देखें
नजर आये जलवे नज़र को हमारी
नजर हम भी ऐसी बनाकर के देखें

सिवा तेरे कदमों के किस में है ताकत
जो औरों को हम सर झुका कर देखें
करें तुमको सिजदे झुके तेरे दर पर हम
यही आरजू हम पा कर तो देखें

हविस हाय दुनिया की जाती नही है।

भला किस तरह हम मिटा करके देखें

तुम्हारे ही चरणों से मुमकिन है ये भी

कि हम हसरतों को दबा करके देखें

कहाँ इतनी हिम्मत है ऐ बन्दा परवर

कि सोया हुआ दिल जगा करें देखें

निगाहे करम हो इधर भी जरा कि

तभी आपके कदमों में आकर के देखें

(28)

रहे कायम सदा श्री सत्गुरु तेरा सनमखाना[1]

है हम खानाबदोशों[2] ने इसी को आसरा जाना ॥

दुआ दे जाते हैं हम याद रखना अहले दिल[3] सबही।

यहाँ के सबही बन्दों को मिलेगा दरस जानाना[4] ।।

यह जाने क्या करिश्मा[5] है तेरी बन्दा नवाजी[6] का।

मेरी सूरत फकीराना तेरा दरबार शाहाना।।

पहुँच कर धाम में भी हम दुहाई देंगे रहमत की।

अगरचे हमने दुनिया में लजाया है तेरा बाना

1मन्दिर

2निराश्रित

3प्रेमी जन

4प्रियतम

5चमत्कार

6भक्तवत्सलता

सरस दरबार मे तेरे न आते क्यों नहीं आते।

'नहीं देखा कहीं हमने गरीबों का गुज़र पाना॥।

था ऐसा कौन जो हमको लगाता अपने सीने से।

उन्हें ही एक आता है गुलहगारों को अपनाना॥॥

नही कुछ फिक है दुनियाँ का उकवा[7]' का या मुक्ति का।

हू प्यासा प्रेम का पी जिसको हो जाऊँ मैं मस्ताना।।

छकी दृष्टि से हमको देख लेना और दुआ देना।

है नकशे[8]* कलहजरदिल पर तुन्हार मंद मुस्काना।।

जुगल ऐसा सबी है कौन जो बड्शे सारी दौलत को।

मुबारिक हो मुबारिक हो तुझे दरबार में आना॥।

(29)

आसरा इस जहाँ का मिले न मिले,

मुझे तेश सहारा सदा चाहिए।

चाँद तारे फलक पर दिखे न दिखे,

मेरे दिल में नजारा तेरा चाहिए।

चहाँ खुशियाँ है कम और ज़्यादा हैं गम,

जहाँ देखा वही है भरम ही भरम।

मेरी महफिल में शर्मों जले न जले,

मेरे दिल में उजाला तेरा चाहिए। आसरा.....

7 . परलोक

8 . अमिट अंकन

कहीं वैराग है कहीं अनुराग है,

जहां बदले न माली , वही बाग़ है

मेरी चाहत की दुनिया बसे न बसे ,

मेरे दिल में बसेरा तेरा चाहिए । आसरा.....

मेरी धीमी है चाल और पथ यह विशाल,

हर तरफ है मुसीबत अब तू ही संभाल ।

पैर मेरे थके है चले न चले ,

मेरे दिल में नज़ारा तेरा चाहिए । आसरा .....

(30)

इसी दर पे ही अब तो ढेर होगी जिन्दगी अपनी।

कभी तो रंग लायेगी यहाँ पर रिन्दगी अपनी ।।

बिधि की क्या जरूरत निषेधों की न हाजत है।

शराबे शौक में अलमस्त रहना बंदगी अपनी ।।

यहाँ तो अड़के बैठे है मिटायेंगे अपनपे को ।

सुरत में महब' हो जाना ही है पाबंदगी अपनी।।

हज़ारों पामरों को पाक कर देती है दम भर में ।

बकत रखती है क्या उनकी नजर में गंदगी अपनी।।

नहीं कुछ बन पड़ा हमसे सरस गुरु का भरोसा है।

बना देगी जुगल सब काम यह शरमिंदगी अपनी।।

फक्कडपन, तन्मय, महत्त्व

निगाहें लुत्फ मुझ पर भी जरा एक बार हो जाए।
मेरा उजड़ा हुआ यह दिल शहा गुलज़ार हो जाए ।।

तुम्हारे रहम के सदके नहीं यमराज का डर है।
मेरे सर पर गुनाहों का अगर अम्बार हो जाए।।

लगी है आस चरणों की नहीं मुतलक मुझे परवा
जमाना मुझसे फिर जाये उर्दू' संसार हो जाये ।।

दया दृष्टि तुम्हारी श्री गुरु अक्सीरे आज़म' है।
पड़े जिस पर सरासर नूर' आखिरकार हो जाए ।।

तमन्ना है यही दिल में सुनो प्यारे दया करके।
सलोनी साँवली छबि का ज़रा दीदार हो जाए ।।

बनी है जान पर आकर भंवर में आ पड़ी किश्ती।
करो रहमत जुगल का र्सस बेड़ा पार हो जाए।।

1बलिहार

2. दुश्मन,

3. सर्वरोगनाशक औषधि

4प्रकाश

5दर्शन

इल्तजा

करूँ इल्तजा किस से मैं ऐ ख़ुदा।
नहीं दूसरा कोई तेरे सिवा ।।

सिवा तेरे मुश्किलकुशां कौन है।
गरीबों का वाली बता कौन है ।।

तू फरमांरवा' हम है फरमापिज़ीर ।
हम उफ़तादा' बेकस' है तू दस्तगीर" ।।

किया मैंने यह जो दिल से कबूल'।
कि सच्चा है तू और तेरे रसूल" ।।

हमारा यह ईमान बिलगैब है।
कि तू सब का माबूद "लारैब" है।

भला क्यों कर होवे हमारी मजाल
न माने तेरा हुक्म ऐ जुल्जलाल" ।।

मगर नफसोशैता" के मकरोफरेब "।
लिये लेते हैं अक्ल ' 'सबरो शिकेब" ।।

जहाँ फूंका इक वसवसा" कान में।
तजलजुल पड़ा दीनो-ईमान में ।

पड़ा जिस घडी मासियत का हिजाब"।
नहीं सूझता कुछ अजाबो सबाब॥

विनती, विपत्तिदूर करने वाला, दीनबंधु हाकिम, आज्ञाकारी, व्यर्थ, निराश्रय, समर्थ, स्वीकार, अवतार, दृढ विश्वास, हृदय से, पूज्यनीय, निस्संदेह, परम प्रकाशवान मन और वासना, कपट और छल, बुद्धि, संतोष और शांति, वासना अस्थिरता, अज्ञान, पर्दा, पाप, पुण्य

दिखाता है शैता इधर अपना रंग ।

उधर नफ्सेअम्मारा" करता है तंग।।

बिछे हर तरफ नफ्सोशैता के जाल।

बचा अपनी कुदरत से ऐ जुलजलाल ।।

कटी हाय गफलत में उम्रे - अजीज"।

न की नेकी-बद में जरा कुछ तमीज ॥

हुए फेल " हमसे बहुत नारवा ।

हुई हमसे बाके" खता" पर खता।।

खतायें मेरी अफू" कर ऐ करीम"।

कि है जात तेरी गफुरुर्रहीम"||

है अफसोस पास एक खोशा" नहीं।

सफर" ऐसा दूर और तोशा" नहीं।

मदद मेरी ऐ मेरे रहमान कर

मेरी सख्त मन्जिल" को आसान कर

रहूँ यूँ मुहब्बत" में साबित कदम"।

कि गाफिल न हूँ तुझ से मैं एक दम ।।

रहूँ या कि दुनियाँ से जाऊँ गुजर"।

न निकलूँ तेरे हुक्म" से जर्रा " भर।।

तमोगुण असावधानी. प्रिय आयु, भलाई बुराई, विवेक, कर्म, अनुचित, घटित होना, अपराध क्षमा, कृपालु, कृतार्थ करने वाला, पुण्य फल, यात्रा , सम्बल, दयालु, लक्ष्य, प्रेम, दृढ, भूलूं, चल बसूं, आज्ञा, तनिक भी।

हैं दुनिया में जो मेहरबानो-शफीक"।

ये सब जीते दम के हैं अपने रफीक" ।।

सर अंजाम जिस दिन कि आखिर हुआ।

चिता में हो रख कर के एक-एक जुदा।।

न पूछेगा मरघट में आकर कोई।

कि ऐ खस्तातन" क्या है हालत तेरी ।।

मगर तुझसे उम्मीद" है मेरे खुदा।

कि हर हाल में है तू मूनिस" मेरा ।।

न रुसवा मुझे ऐ ख़ुदा कीजियो।

मेरी शर्म महशर" में रख लीजियो।।

अमल" पर नही जोम" बिल्कुल मुझे।

तेरी जात का है तबस्सुल" मुझे ॥

मेहरबान और मित्र, साथी, मृत्यु, अति पीड़ित, आशा, हितैषी, तिरस्कार, अंतिम परीक्षा, कर्म, अभिमान, सहारा।

पीर से उल्फत हो मुझको और बनूं उनकी मुराद
श्रीराम के श्रीकृष्ण की अनुपम दया के वास्ते।

हे प्रभो, निज प्रेम देकर, सबके दुःख हर लीजिए,
श्रीकृष्ण के करतार की अविरल कृपा के वास्ते।

प्रेम हो श्री कृष्ण का और नूर हो करतार का
सत्कार श्री गुरु का करें शक्ति कृपा के वास्ते।

'सब का भला करो भगवान'

भला करो भगवान सबका भला करो।
भला करो..... भला करो..... दाता दया निधान, सबका भला करो।
भला करो भगवान.....
तुम्ही हो माता पिता हमारे वह जग चलता तेरे सहारे।

हम तेरी सन्तान, सबका भला करो।

भला करो भगवान.....

तू सबका है प्रीतम प्यारा, सबसे ऊँचा सबसे न्यारा ।

सकल गुणों की खान, सबका भला करो।

भला करो भगवान.....

तू जग का है पालनहारा, हम सब जीते तेरे सहारे।

हे जगदीश महान, सबका भला करो।

भला करो भगवान.....

झोलियाँ सबकी भर दो दाता, तू है सबका भाग्य विधाता।

दो सबको वरदान, सबका भला करो।

भला करो....भला करो.....

प्रासादार्पण एवं दुआ

आइये अति प्रेम से, यह प्रेम का उपहार है।

प्रार्थना स्वीकार हो, यह प्रेम का सत्कार है।

आइये अति प्रेम से, यह प्रेम का उपहार है।

प्रेम बढ़े और दुई मिटे, यह प्रेम का विस्तार है।

सदा से सनेही रहे आपके है कृपा पात्र जाते कहे आपके हैं।

आशा है हमको निराशा न होगी। आशा है दृढभंग, आशा न होगी।

जामे राहत से सभी सरसार हो,

सबके सब नावाकिफे आजार हो

सबको हासिल हो फरागे जिन्दगी,

सबका रौशन हो चिरागे-जिन्दगी ।

सबकी खैरो-आफियत की है दुआ,

अहले आलम में हो हर एक का भला

मुब्तिलाये दर्दो गम कोई न हो,

तेरा महरुमे करम कोई न हो।

अर्थ- शांति, सुख-चैन का प्याला सभी जी भर पियें, कष्ट से दूर रह कर जियें। सभी का जीवन खिले, महके, सदा फूले फले और जीवन दीप में , ब्रह्मज्योति की लौ नित जले। हों कुशल मंगल सभी के घर - यही है प्रार्थना, विश्व के कल्याण की बढ़ती रहे शुभकामना । कहीं भी कोई कभी दुख-सुख से पीड़ित न हो, आपकी अनुपम दया से कोई भी वंचित न हो।

शांति पाठ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षग्वंग शान्तिः पृथिवी शांतिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वग्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शांतिरेधि । ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।

भावार्थ

हे परमेश्वर आपकी कृपा से सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्रों के प्रकाश से प्रकाशमान आदित्यलोक शान्ति प्रदाता हो। ध्यूलोक और पृथ्वी के मध्य स्थित आकाश शांतिकारक हो। पृथ्वीलोक, भूमि और भूमि से उत्पन्न होने वाले पदार्थ शांति प्रदान करने वाले हो। नदी, समुद्र और कूप के जल शांतिदायी हों। अन्न और सोमलता आदि औषधियां शांतिदायिनी हो। वट गूलर आदि वनस्पतियाँ शांतिकारक हो। सूर्य, चंद्र आदि सब दिव्य शक्तियाँ, सब विद्वान लोग शांति देने वाले हों। वेद, ज्ञान, परमेश्वर शांतिदायी हो। सब दिव्य शक्तियों एवं पदार्थ शांतिकारक हो। स्वयं शांति भी शांति देने वाली हो। सबको आह्लाद प्रदान करने वाली वह शांति मुझे प्राप्त हो। देव! मुझे वह शांति प्रदान कर कि में संघर्षो से जूझता हुआ भी सदा शांत रहूँ।

परम पूज्य गुरुदेव महात्मा डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज की अनमोल वाक्य मणियाँ

अपने ख्यालों को हमेशा शुद्ध करते जाओ। ख्यालों पर काबू पाने की कोशिश करो। बुद्धि को सांसारिक विचारों से हटाकर संतों की वाणी, शास्त्रों के उपदेश और परमात्मा के नाम में लगाओ। मन की इच्छाओं पर विजय पाओ और मन को गुरु के ध्यान में लगाओ। इन्द्रिओं का आचार ठीक करो। कोशिश करो कि इन्द्रियाँ सांसारिक विष्टा रूपी पदार्थों की बजाय हर जगह ईश्वर को देखें। यही रहनी सहनी का ठीक करना है।

मन को काबू में लाना बहुत मुश्किल काम है बल्कि दुनियाँ में सबसे मुश्किल काम है। वैराग्य और अभ्यास दो ही इसके साधन है। यह निश्चय हो जाना कि यह चीजें क्षणभंगुर हैं यानी तब्दील होने वाली हैं और उनसे हमेशा का सुख नहीं मिल सकता, उनसे अलहदगी अख्तयार कर लेनी चाहिये, यह वैराग्य है परमात्मा का नाम दिल की जुबान यानी ख्याल से लेते रहना, अभ्यास है।

जय-जब मौका मिले संतों-गुरुजनों की सेवा करो। उनको प्रसन्न करो, उनके उपदेशों को हित-चित्त से सुनो और उन पर अमल करने की कोशिश करो। हमेशा पूरी

कामयाबी होगी, कभी निराशा नहीं होगी। यही ईश्वर प्राप्ति का सच्चा , सीधा और सहज रास्ता है।

अहं को दीनता में बदल दो। इससे मन का मान घटता जाता है और ईश्वर का प्रेम बढ़ता जाता है । अपने आपको दुनियाँ का सेवक समझो, सबमें ईश्वर का रूप देखो, इससे दीनता आती है।

मन की हालत को देखते चलो और गुरु की कृपा, उनके प्रकाश की धार (फैज) का अपने ऊपर अनुभव करते रहो। यही सत्संग है।

पूज्य गुरुदेव श्री करतार सिंह जी साहब की आज्ञा

(नित्य पढ़े-मनन करें तथा अपने जीवन में उतारें)

श्रीमद्भगवत गीता के द्वादशोअध्याय का भाष्य

अर्जुन बोले:-

जो अनन्यप्रेमी भक्तजन पूर्वोक्त प्रकार से निरन्तर आपके भजन-ध्यान में लगे रहकर आप सगुणरूप परमेश्वर को और दूसरे जो केवल अविनाशी सच्चिदानन्दघन निराकार ब्रह्म को ही अतिश्रेष्ठ भाव से भजते हैं - उन प्रकार के उपासकों में अति उत्तम योगवेत्ता कौन हैं ?

श्रीभगवान् बोले:-

मुझमें मन को एकाग्र करके निरंतर मेरे भजन- ध्यान में लगे हुए जो भक्तजन अतिशय श्रेष्ठ श्रद्धा से 'युक्त होकर मुझ सगुण रूप परमेश्वर को भजते हैं, वे मुझको योगियों में अति उत्तम योगी मान्य हैं। परन्तु जो पुरुष इन्द्रियों के समुदाय को भली प्रकार वश में करके मन-बुद्धि से परे, सर्वव्यापी, अकथनीय स्वरूप और सदा एकरस रहने वाले, नित्य, अचल, निराकार, अविनाशी सच्चिदानन्दघन ब्रह्म को निरन्तर एकीभाव से ध्यान करते हुए भजते हैं, वे सम्पूर्ण भूतों के हित में रत और सब में समान भाव वाले योगी मुझको ही प्राप्त होते हैं।

उन सच्चिदानन्दघन निराकार ब्रह्म में आसक्त चित्तवाले पुरुषों के साधन में परिश्रम विशेष है, क्योंकि देहाभिमानियों के द्वारा अव्यक्तविषयक गति दुःखपूर्वक प्राप्त की जाती है।

परन्तु जो मेरे परायण रहने वाले भक्तजन सम्पूर्ण कर्मों को मुझमें अर्पण करके मुझ सगुणरूप परमेश्वर को ही अनन्य भक्तियोग से निरन्तर चिन्तन करते हुए भजते हैं।

हे अर्जुन! उन मुझमें चित्त लगाने वाले प्रेमी भक्तों का मैं शीघ्र ही मृत्युरूप संसार-समुद्र से उद्धार करने वाला होता हूँ।

मुझमें मन को लगा और मुझमें ही बुद्धि को लगा, इसके उपरान्त तू मुझमें ही निवास करेगा, इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

यदि तू मन को मुझमें अचल स्थापन करने के लिए समर्थ नहीं है तो हे अर्जुन! अभ्यासरूप योग के द्वारा मुझको प्राप्त होने के लिये इच्छा कर।

यदि तू उपर्युक्त अभ्यास में भी असमर्थ है तो केवल मेरे लिए कर्म करने के ही परायण हो जा। प्रकार मेरे निमित्त कर्मों को करता हुआ भी मेरी प्राप्तिरूप सिद्धि को ही प्राप्त होगा। यदि मेरी प्राप्ति रूप योग के आश्रित होकर उपर्युक्त साधन को करने में भी तू असमर्थ है तो मन-बुद्धि आदि पर विजय प्राप्त करने वाला होकर सब कर्मों के फल का त्याग कर।

मर्म को जानकर किये हुए अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से मुझ परमेश्वर स्वरूप का ध्यान श्रेष्ठ है और ध्यान से भी सब कर्मों का त्याग श्रेष्ठ, क्योंकि त्याग से तत्काल ही परम शान्ति होती है।

जो पुरुष सब भूतों में द्वेषभाव से रहित, स्वार्थ रहित, सब का प्रेमी और हेतु रहित दयालु है तथा ममता से रहित, अहंकार से रहित, सुख-दुख की प्राप्ति में सम और क्षमावान् है अर्थात् अपराध करने वाले को भी अभय देने वाला है तथा जो योगी निरन्तर संतुष्ट है, मन- इन्द्रियों सहित शरीर को वश में किये हुए है और मुझमें दृढ़ निश्चय वाला है- वह मुझमे अर्पण किये हुए मन-बुद्धि वाला मेरा भक्त मुझको प्रिय है।

जिससे कोई भी जीव उद्वेग को प्राप्त नहीं होता और जो स्वयं भी किसी जीव से उद्वेग को प्राप्त नहीं होता, तथा जो हर्ष, अमर्ष, भय और उद्वेगादि से रहित है - वह भक्त मुझको प्रिय है।

जो पुरुष आकांक्षा से रहित, बाहर भीतर से शुद्ध, चतुर पक्षपात से रहित और दुःखों से छुटा हुआ है- वह सब आरम्भो का त्यागी मेरा भक्त मुझको प्रिय है।

जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न कामना करता है तथा शुभ और अशुभ सम्पूर्ण कमों क त्यागी है वह भक्तियुक्त पुरुष मुझको प्रिय है।

जो शत्रु-मित्र में और मान-अपमान में सम है तथा सर्दी, गर्मी और सुख-दुःखादि द्वन्दों में सम है और आसक्ति रहित है।

जो निन्दा-स्तुति को समान समझने वाला, मननशील और जिस किसी प्रकार से भी शरीर का निर्वाह होने में सदा ही सन्तुष्ट है और रहने के स्थान में ममता और आसक्ति से रहित है - वह स्थिर बुद्धि भक्तिमान पुरुष मुझको प्रिय है।

परन्तु जो श्रद्धायुक्त पुरुष मेरे ही परायण होकर इस ऊपर कहे हुए धर्ममय अमृत को निष्काम प्रेमभाव से सेवन करते हैं, वे भक्त मुझको अतिशय प्रिय है।

सबका भला करो भगवान्

सब पर दया करो भगवान

सबके पाप हो भगवान,

सबके कष्ट हरो भगवान |

अवगुण दूर करो भगवान,

सबको सन्मति दो भगवान

सबको क्षमा करो भगवान,

सब में आप रमो भगवान